SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पारिजात

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

अंकः 62वाँ वर्षः 2024

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों की झलकियाँ

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग

पारिजात

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका

अंकः 62वाँ

प्रकाशक एवं स्वामित्वाधिकार

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा

पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर-273012

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के विचार निजी हैं, जिससे पारिजात परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पारिजात-परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री अभिषेक सिंह

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री विकास आहूजा

उप निदेशक

संपादक

श्री राम प्रकाश पाण्डेय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

संकलनकर्ता

श्री ललित रंजन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

श्रीमती बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक

श्री इम्तियाज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचनाएँ/लेख	रचनाकारों/लेखकों के नाम(श्री/श्रीमती/सुश्री)	पृ.सं.
1.	जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती	शुभेंदु कुमार नाथ, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	09
2.	पाताल भुवनेश्वर गुफा मंदिर	प्रवीण कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	11
3.	शहरीकरण एवं उससे जुड़ी समस्याएं	रजनीश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	13
4.	भक्ति आंदोलन का उद्भव और विकास	देवेंद्र प्रताप कौशल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	15
5.	इतिहास के पन्नों से गायब, महात्मा लटूरी सिंह	राजेश कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	17
6.	विश्व गौरैया दिवस	विनीता पाण्डेय, पत्नी श्री नवीन कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	19
7.	लिंग भेद मिटाने में डिजिटल विकास की भूमिका	पारूल पाण्डेय, पुत्री श्री नवीन कुमार पाण्डेय, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	21
8.	कोविड-19 और संसार	संदीप कुमार पाठक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	23
9.	अच्छाईयों का सागर	विजय कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	27
10.	प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं परिणाम	बबिता मणि, कनिष्ठ अनुवादक	28
11.	उच्च शिक्षा हेतु भारतीय छात्रों का पलायान	इम्तियाज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक	32
12.	संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रवृत्ति	अनुश्री विश्वकर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	35
13.	जय श्री सरस्वती माँ	मीना रानी गोड़, लेखापरीक्षक	38
14	ग्लोबल वार्मिंग	एम. रहमान खान, डाटा एंट्री ऑपरेटर	39
15.	आदरणीय दीदी एवं जीजा जी को विवाह की पचासवीं वर्षगाँठ की बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।	संध्या सिंघल, पत्नी श्री समीर कुमार सिंघल, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	42
16.	कविता	मो. वसीम खान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	43

प्रधान निदेशक की कलम से...

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका 'पारिजात' के 62वें अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी को कार्यालयी स्तर पर काम-काज करने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को एकजुट करने एवं राजभाषा हिंदी के प्रति उनके असीम लगाव को प्रदर्शित करती है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कार्यालयी स्तर पर हिंदी पत्रिकाओं के प्रकाशन के पहल की मैं सराहना करता हूँ क्योंकि इन पत्रिकाओं के माध्यम से हमें राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में काफी सफलता मिली है। 'पारिजात' पत्रिका राजभाषा हिंदी को कार्यालय में सुचारू रूप से कार्यान्वित करने में अत्यंत ही सफल साबित हुई है। मैं आशा करता हूँ कि 'पारिजात' पत्रिका इसी प्रकार हिंदी भाषा को और अधिक आगे ले जाने में भी सहायक सिद्ध होगी।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं/लेखों के रचनाकारों/लेखकों तथा संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

अभिषेक सिंह
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

उप निदेशक की कलम से...

हमारे कार्यालय की राजभाषा हिंदी पत्रिका 'पारिजात' के नवीनतम अंक का 62वें अंक के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है जो कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अत्यंत ही हर्ष का विषय है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों को देखते हुए यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि पत्रिका के प्रति कार्यालय के कर्मियों की अत्यधिक रूचि है।

आज के इस अंग्रेजी वर्चस्व भरे माहौल में केंद्रीय सरकार के कार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी पत्रिकाएँ राजभाषा हिंदी को एक अलग पहचान प्रदान करने में अपनी महती भूमिका निभा रहीं हैं। कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी ई-पत्रिका 'पारिजात' भी हिंदी भाषा को एक नए आयाम तक ले जाने में अत्यंत ही मददगार साबित हो रही है।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं/लेखों के रचनाकारों/लेखकों तथा संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

विकास आहूजा
उप निदेशक

संपादक की कलम से...

यह बहुत ही हर्ष का विषय है कि कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर की हिंदी ई-पत्रिका 'पारिजात' के 62वें अंक का सफल प्रकाशन किया जा चुका है। यह पत्रिका कार्यालय के कर्मियों के राजभाषा हिंदी के प्रति उनके स्नेह को प्रदर्शित कर रही है। साथ ही, 'पारिजात' पत्रिका के सतत प्रकाशन के माध्यम से हम हमारी राजभाषा हिंदी को एक नई दिशा देने की ओर उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहे हैं। भविष्य में भी हम 'पारिजात' पत्रिका के माध्यम से हिंदी भाषा को कार्यालय स्तर पर और अधिक लोकप्रिय बनाने का निरंतर प्रयत्न करते रहेगें।

आप सभी से अनुरोध है कि 'पारिजात' पत्रिका की प्राप्ति के उपरांत पत्रिका के प्रति अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएँ ताकि 'पारिजात' पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक बेहतर बनाने में हमें मार्गदर्शन मिल सके। पत्रिका के बारे में आप सभी के बहुमूल्य सुझावों एवं मार्गदर्शन की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

अंत में, मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं/लेखों के रचनाकारों/लेखकों को पत्रिका के सफल संपादन के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

राम प्रकाश पाण्डेय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

जलवायु परिवर्तन-एक वैश्विक चुनौती

शुभेंदू कुमार नाथ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्तमान में विश्व भर में हो रहे जलवायु परिवर्तन वैश्विक समाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इससे निपटना समय की आवश्यकता है। ग्रीनहाउस गैसें पृथ्वी से बाहर जाने वाले ताप अर्थात दीर्घतरंगीय विकिरण को अवशोषित कर पृथ्वी के तापमान को बढ़ा रही हैं जिसमे मुख्यतः कार्बन डाई ऑक्साइड, मीथेन, ओज़ोन आदि गैसें शामिल हैं। 19वीं सदी के अंत से अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लगभग 1.62 डिग्री फॉरनहाइट (अर्थात् लगभग 0.9 डिग्री सेल्सियस) बढ़ गया है।

जलवायु परिवर्तन का आशय किसी दिए गए क्षेत्र में लंबे समय तक औसत मौसम से होता है एवं इसका प्रभाव संपूर्ण विश्व में महसूस किया किया जा रहा है। पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी का तापमान बीते 100 वर्षों में 1 डिग्री फॉरेनहाइट तक बढ़ गया है जिसका मानव जाति पर प्रतिकूल असर हो रहा है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने से हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ रहा है, रेगिस्तान पसरते जा रहे हैं, कहीं असामान्य बारिश हो रही है कही सुखा पड़ रहा है। परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं और कुछ द्वीप के डूबने का खतरा बढ़ा है।

वैश्विक तापन का प्रमुख कारण मानवीय गतिविधियों के कारण वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि होना है। पृथ्वी के चारों ओर ग्रीनहाउस गैस की एक परत बनी हुई है, इस परत में मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें शामिल हैं। ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन मुख्यतः शहरीकरण और औद्योगिकीकरण, वनों की कटाई, जीवाश्म ईंधनों के दोहन, उद्योगों, मोटर वाहनों, धान के खेतों, पशुओं की चराई, पावर प्लांट, ऑटोमोबाइल, रेफ्रीजरेटर, एयर-कंडीशनर आदि से होता है।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य प्रभाव बढ़ते तापमान, पानी की कमी, आग के खतरों में वृद्धि, सूखा, समुद्र के अम्लीकरण, मरुस्थलीकरण के कारण पर्यावरणीय प्रवासन, वर्षा के पैटर्न में बदलाव, रोगों का प्रसार औऱ आर्थिक नुकसान, वन्यजीव प्रजाति का नुकसान और तूफान तथा समुद्र के स्तर में वृद्धि के कारण तटीय बाढ़। जलवायु परिवर्तन के कारण फसल की पैदावार कम होने से खाद्यान्न समस्या उत्पन्न होने के, साथ ही भूमि निम्नीकरण जैसी समस्याएँ भी सामने रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र के प्रयास से अंतर-सरकारी पैनल (IPCC: Intergovernmental Panel on Climate Change) गठित की गयी यह संयुक्त राष्ट्र का आधिकारिक पैनल है जिसमें 195 सदस्य देश हैंजो जलवायु में बदलाव और ग्रीनहाउस गैसों का ध्यान रखता है। इसके अलवा संयुक्त

राष्ट्र के प्रयास से यूएनएफसीसीसी (UNFCCC: संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन फ्रेमवर्क सम्मेलन) 21 मार्च 1994 को लागू हुआ। आज, इसकी लगभग सार्वभौमिक सदस्यता है। जिन 198 देशों ने कन्वेंशन की पुष्टि की है उन्हें कन्वेंशन के पक्ष कहा जाता है। जलवायु प्रणाली में "खतरनाक" मानवीय हस्तक्षेप को रोकना यूएनएफसीसीसी का अंतिम उद्देश्य है।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) को औपचारिक रूप से 30 जून 2008 को लागू किया गया। इसका उद्देश्य जनता के प्रतिनिधियों, सरकार की विभिन्न एजेंसियों, वैज्ञानिकों, उद्योग और समुदायों को जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न खतरे और इससे मुकाबला करने के उपायों के बारे में जागरूक करना है। राष्ट्रीय कार्य योजना के कोर के रूप में आठ राष्ट्रीय मिशन हैं।

- राष्ट्रीय सौर मिशन
- विकसित ऊर्जा दक्षता के लिये राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर निवास पर राष्ट्रीय मिशन
- राष्ट्रीय जल मिशन
- सुस्थिर हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र हेतु राष्ट्रीय मिशन
- हरित भारत हेतु राष्ट्रीय मिशन
- सुस्थिर कृषि हेतु राष्ट्रीय मिशन
- जलवायु परिवर्तन हेतु रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन

उपरोक्त उपायों के साथ अक्षय ऊर्जा के उपायों पर ध्यान देना, कोयले से बनने वाली बिजली के बदले पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा और पनबिजली पर ध्यान देना, सीएफसी गैसों का कम ऊत्सर्जन करना, कार्बन उत्सर्जन कम कर परिवहन में हरित साधनों का इस्तेमाल, औद्योगिक इकाइयों की चिमनियों से निकले वाला हानिकारक धुँआ को रोकना, रासायनिक एवं स्वास्थ इकाइयों से निकलने वाले कचरे का सही निस्तारण घटते वन क्षेत्र को बहाल करना, जलवायु आधारित कृषि को बढ़ावा देना, बड़े बांधों को मजबूत बनाना, भूजल का संरक्षण के तटों की सुरक्षा के लिए मैंग्रोव लगाना, बाढ़ संभावित क्षेत्रों को सुरक्षित बनाना, वनों की कटाई रोकना, जंगलों के संरक्षण पर बल देना मुख्य उपाय है जिस पर प्रयास करना अति आवश्यकता है।

*****

पाताल भुवनेश्वर गुफा मंदिर

प्रवीण कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले से करीब 90 किमी दूर पाताल भुवनेश्वर गुफा मंदिर स्थित है। इस मंदिर का जिक्र पुराणों में भी किया गया है। जानिए इस मंदिर के बारे में रोचक बातें। Patal Bhuvaneshwar Cave Temple: देश-दुनिया में भगवान शिव को समर्पित कई मंदिर से लेकर गुफाएं मौजूद है, जो अपनी अलग-अलग रहस्यों के कारण प्रसिद्ध है। इन्हीं गुफाओं में से एक है उत्तराखंड में स्थित पाताल भुवनेश्वर मंदिर। माना जाता है कि इस मंदिर में दुनियाँ खत्म होने का एक रहस्य छिपा हुआ है। माना जाता है कि यह मंदिर समुद्र तल से करीब 90 फीट गहरी है। इसके साथ ही गुफा प्रवेश द्वार से 160 मीटर लंबी है। जानिए पाताल भुवनेश्वर मंदिर के बारे में।
पाताल भुवनेश्वर मंदिर उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के गंगोलीहाट में स्थित है। इस मंदिर में भगवान शिव के दर्शन के लिए किसी पहाड़ नहीं बल्कि गुफा में जाना पड़ता है। पाताल भुवनेश्वर मंदिर देवदार के घने जंगलों से घिरा हुआ है।

एकलौता मंदिर जहां से होते हैं चारों धामों के दर्शन!

पुराणों के अनुसार, पाताल भुवनेश्वर इकलौता ऐसा मंदिर माना जाता है जहां से चारों धाम यानी केदारनाथ, बद्रीनाथ, अमरनाथ के दर्शन होते हैं। गुफा में केदारनाथ, बद्रीनाथ, माता भुवनेश्वरी, आदि गणेश, भगवान शिव की जटाएं, सात कुंड, मुक्ति द्वार, धर्म द्वार व अन्य देवी देवताओं के आकृतियों को देख सकते हैं। माना जाता है कि पाताल भुवनेश्वर मंदिर में 33 कोटि देवी-देवता निवास करते हैं। इस मंदिर की खोज की बात करें, तो पुराणों त्रेता युग में सूर्य वंश के राजा ऋतुपर्ण ने की थी, जो उस समय अयोध्या में शासन करते थे। इसका उल्लेख मानस खंड और स्कंद पुराण में किया गया है। इसके बाद द्वापर युग में पांडवों ने इस मंदिर को खोजा था। जहां पर उन्होंने भगवान शिव के साथ चौपड़ खेला था। इसके बाद जगत गुरू शंकराचार्य ने करीब 819 ई में इस गुफा की खोज की थी और उन्होंने ही राजा को जानकारी दी थी। इसके बाद राजाओं के द्वारा ही गुफा में पूजा कार्य के लिए पुजारियों (भंडारी परिवार) को लाया गया था।

मौजूद है भगवान गणेश का कटा हुआ मस्तक

हिंदू पुराणों के अनुसार, जब भगवान शिव से क्रोधित होकर भगवान गणेश का सिर धड़ से अलग कर दिया था। बाद में माता पार्वती के कहने पर गणेश जी को हाथी का सिर लगाया गया था। वहीं, जो सिर भगवान शिव ने अलग किया था। माना जाता है कि वह पाताल भुवनेश्वर गुफा में मौजूद है। इस गुफा में गणेश जी का कटा शिला रूपी मूर्ति के ठीक ऊपर 108 पंखुड़ियों वाला ब्रह्मकमल रूप में एक चट्टान मौजूद है।

पाताल भुवनेश्वर मंदिर में मौजूद है चार द्वार

पौराणिक कथाओं के अनुसार, पाताल भुवनेश्वर मंदिर में चार द्वार मौजूद है। जिनका नाम क्रमश: और द्वार, पाप द्वार, धर्म द्वार और मोक्ष द्वार है। माना जाता है कि जब लंकापति रावण की मृत्यु हुई थी तब पाप द्वार बंद हो गया था। इसके बाद महाभारत के युद्ध के बाद रण द्वार बंद हो गया था। अब सिर्फ दो ही द्वार खुले है।

पाताल भुवनेश्वर मंदिर काफी खास माना जाता है। यह गुफा अपने आप पर रहस्यों से भरी हुई है। कहा जाता है कि यहां पर चार खंभे है, जो युगों के हिसाब से यानी सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलयुग नाम से हैं। कलयुग खंभे को छोड़कर किसी खंभे में कोई बदलाव नहीं है। यह खंभा तीनों खंभों से ज्यादा लंबा है। इसके साथ ही यहां पर विराजित शिवलिंग का आकार तेजी से बढ़ रहा है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माना जाता है कि जब यह शिवलिंग गुफा की छत को छू लेगा,तब दुनिया खत्म हो जाएगी।

इस मंदिर आप रेल, हवाई और सड़क मार्ग से जा सकते हैं। सबसे पास हवाई अड्डा पंतनगर है। इसके साथ ही रेलवे स्टेशन टनकपुर है। पिथौरागढ़ से करीब 90 किलोमीटर दूर यह गुफा स्थित है। अगर आप मंदिर जाने का प्लान बना रहे हैं, तो अच्छा समय मार्च से जून और सितंबर से नवंबर तक है।

*****

शहरीकरण एवं उससे जुड़ी समस्याएँ

रजनीश कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

किसी राष्ट्र की कई सारी प्रमुख समस्याओं में से एक समस्या शहरीकरण भी है। किसी राष्ट्र का बढ़ता हुआ जनसंख्या का आकार जब शहर की तरफ निवास के लिया बढ़ता है तो उसे नगरीकरण या शहरीकरण कहते हैं दूसरे शब्दों में शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत शहरों का अधिक पैमाने पर विस्तार होता है। शहरीकरण वास्तव में एक सतत परिवर्तनशील प्रक्रिया है जिसमें ग्रामीण क्षेत्रो की जनसंख्या का शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन होता है जो ग्रामीण एवं शहरी जीवन के बीच एक प्रकार का अंतर पैदा करता है भारत में स्वतन्त्रता के बाद शहरों के जनसंख्या एवं आकार में तेजी से बढ़ोतरी हुई है जो की चिंताजनक है।

शहरीकरण का कारण

शहरीकरण के निम्नलिखित प्रमुख कारण हैः-

1 रोजगार के अवसरः- शहरीकरण के प्रमुख कारणों मे से एक कारण ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार के अवसर का उपलब्ध न होना भी है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र की जनता शहरों की तरफ पलायन करती है।

2 शैक्षणिक संस्थानः- ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च एवं तकनीकी शिक्षा की अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण भी ग्रामीण क्षेत्र की जनता शहरों की तरफ रुख करती है।

3 खराब स्वास्थ्य सुविधाएः- ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त एवं अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं न होना भी ग्रामीण जनता को शहरों की ओर जाने के लिए मजबूर करती है।

4 आकर्षक शहरी जीवनशैलीः- शहरों की आकर्षक एवं चकाचौंध भरी जीवनशैली भी ग्रामीण जनता को शहरों की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है

इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रो में रहने की खराब स्थिति एवं आर्थिक असमानता भी शहरीकरण को बढ़ावा देती है।

शहरीकरण से जुड़ी समस्याएँ

अत्यधिक जनसंख्या दबाव-शहरीकरण से शहरों की मौजूदा सार्वजनिक संशाधनों पर अत्यधिक जनसंख्या का दबाव पैदा करती है नतीजतन शहरों में अपराध, बेरोजगारी, शहरी गरीबी, प्रदूषण, भीड़भाड़, खराब स्वास्थ एवं कई अन्य बिकृत सामाजिक गतिविधियों में बृद्धि होती है।

मलिन बस्तियों की बढ़ती संख्या शहरीकरण के कारण महानगरों में मलिन बस्तियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है, महानगरों के बाहरी इलाके में बहुत सारी झुग्गी झोपड़ी बन जाती है जहां लोग एक दूसरे से सटे छोटे-छोटे घरों में रहते हैं और साल दर साल यह बढ़ता ही जाता है।

अपर्याप्त आवास शहरीकरण के अनेक सामाजिक समस्याओं में से आवास की समस्या सबसे चिंताजनक है। मंहगे एवं अपर्याप्त आवास के कारण शहरी आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी की

स्थिति में और अत्यधिक भीड़ भाड़ वाले स्थानो में रहता है भारत में ज़्यादातर शहरी परिवार एक कमरे में रहते हैं जिसमें प्रति कमरा औसतन 4.4 ब्यक्ति रहते हैं।

अनियोजित विकास-शहरीकरण के कारण नियोजित विकास नहीं हो पता है जिसके कारण एक विकसित शहर के निर्माण माडल की तुलना में अनियोजित विकास के कारण शहरों में अमीर और गरीब के बीच प्रचलित द्वंद मजबूत होता है।

गैर समावेशी कल्याण योजनाएँ शहरीकरण के कारण शहरी गरीबों की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अक्सर लक्षित लाभार्थियों के एक छोटे हिस्से तक ही पंहुच पाता है। अधिकांश राहत योजनाओं का लाभ झुग्गी झोपड़ियों में रहने वालों तक नहीं पाता है।

शहरीकरण को दूर करने के उपायः-

शहरीकरण के कारण कई उत्पन्न होती है ये समस्याएँ अधिक गंभीर बने उसके पहले उसे दूर करने के लिये उपाय करने चाहिए जो निम्न प्रकार हैः-

1- नीतिविषयक कदम - 10 लाख से अधिक जनसंख्या वाले शहरों में नए उद्योगों की स्थापना पर नियंत्रण रखकर शहरीकरण को कम किया जा सकता है। छोटे और मध्यम कद के शहरों को प्रोत्साहन देकर बड़े शहरो में होने वाले असमान्य शहरीकरण पर लगाम लगाई जानी चाहिए। सरकार को ऐसी नीति अपनानी चाहिए जिससे की बड़े शहर और बड़े न बने और छोटे और मध्यम शहरों का विकास हो।

2- रोजगार के अवसरों मे बृद्धि - शहरीकरण की समस्या हल करने के लिए सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार के अवसर बढ़े, ऐसे रोजगारलक्षी कार्यक्रम बनाने चाहिए जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबों की आय बढ़ने से वे अधिक अच्छा जीवन स्तर जी सके परिणामस्वरूप उनका रुख शहरों की तरफ कम हो।

3- ढांचागत सुविधाओं में सुधार - ग्रामीण क्षेत्रों में भी ढांचागत सुविधाएँ जैसे बिजली, सड़क, पानी एवं संचार आदि लोगों को मिले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। झोपड़ी में रहने वाले लोगों को पक्के मकान की सुविधा भी उपलब्ध करवाना चाहिए।

4- शिक्षा और आरोग्य की सुविधा - ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब वर्ग शिक्षा और आरोग्य की सुविधा प्राप्त नहीं कर पाता है जिसके कारण भी शहरीकरण की समस्या बढ़ती है इसके लिए गरीब वर्गों को शिक्षा और आरोग्य की सुविधा सरलता से सस्ते दर पर उपलब्ध हो सके ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए।

5- गृह एवं छोटे पैमाने के उद्योगों का विकास - शहरों मे बड़े पैमाने के उद्योगों के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्रों में गृह एवं छोटे पैमाने के उद्योगों का विकास किया जाना चाहिए ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों का भी आर्थिक विकास हो सके।

6- गाँव में आधारभूत सुविधाओं का विकास - ग्रामीण क्षेत्रो में शिक्षा, आरोग्य,यातायात, संचार, सड़क, बिजली, सिंचाई आदि की सुविधाओं को अधिक से अधिक सुदृढ करने से शहरीकरण की प्रक्रिया कम होने से शहरों पर जनसंख्या भार कम होगा।

*****

भक्ति आंदोलन का उद्भव और विकास

देवेंद्र प्रताप कौशल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोई भी वैचारिक, सामाजिक या सांस्कृतिक आंदोलन अचानक अस्तित्व में नहीं आता बल्कि उसको प्रेरित करने वाले संस्कार एक लम्बें समय से उसकी भूमिका तैयार कर रहे होते हैं। भक्ति आंदोलन जैसा आंदोलन भी अचानक अस्तित्व में नहीं आया। इसके भी संस्कार उसकी अपनी परिस्थितियों में भी देखे जा सकते हैं। सामान्य रूप से कोई भी आंदोलन तीन स्तरों पर प्रेरणा ग्रहण करता हुआ सामने आता है। पहला तत्कालीन परिस्थितियाँ, दूसरा अतीत की सुदीर्घ परम्परा तथा तीसरा बाह्य दबाव, निश्चित रूप से अपनी क्रिया-प्रतिक्रिया में किसी भी चिंतन को विराट रूप देते हैं।

भक्ति आंदोलन अपनी जिन तत्कालीन परिस्थितियों से प्रेरणा ग्रहण करता हुआ आया। वे परिस्थितियाँ हीं ऐसी थी कि मध्यकालीन जनमानस प्रत्येक स्तर पर द्वंद, टकहराहट तथा भटकन के दौर से गुजर रहा था। सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक चेतना के तत्व भी अनेकानेक बाह्यचारों से घिर गए थे या ये कहें कि अपना मूल स्वरूप खो बैठे थे। सामंती मानसिकता का विषैला कीड़ा मानव मन के प्रत्येक स्तर को कुतरता जा रहा था, भावनाएँ निस्सहाय ईधर से उधर भटकने के लिए अभिशप्त हो गयी थीं। थोड़ा पीछे मुड़कर देखें तो हमारी राजनीतिक चेतना भी पंगु होती हुई भोग विलास की ओर अग्रसर होती जा रही थी अर्थात सर्वत्र अहम्, बाह्याचार तथा अलगाववादी कारक उभरते जा रहे थे। निश्चित रूप से मध्यकालीन क्षितिज पर मडराने वाले से काले भयानक बादल अपनी छटपटाहट में किसी नई चेतना, किसी नए संबल की तलाश में थे।

अतीत की भक्ति परक सुदीर्घ परम्परा का विश्लेषण करें तो यह पाएंगे कि वेदों, उपनिषदों के चिंतन से अपनी मूल का निर्माण करती हुई भक्ति कभी बुद्ध की करुणा बनकर, कभी महावीर की अहिंसा बनकर, कभी नाथों, सिद्धों, योगियों की अक्खड़ता बनकर तो कभी शंकराचार्य की तर्क शक्ति में अपने स्वरूप को खोजती हुई, अनेक संदर्भों से उलझती-सुलझती मध्यकाल तक पहुँचते-पहुँचते स्वयं ही कुपोषण के अनेक किटाणुओं से भर गई थी। यानि स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि मानव जाति का चिर-परिचित संबल ईश्वर भी अनेक प्रकार के अंर्तविरोधों से घिर गया था। ज्ञानदंभी हो गया था, भकित् बाह्यचारी एवं योग हठवादी हो गया था। भला ऐसे संक्रमण के दौर में हमारी मानवीय संचेतना किसी नए विकल्प की तलाश कैसे नहीं करती।

अब अगर बाह्य दबाव का मूल्यांकन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि अलगाव में ऐसे समय में टूट के मुसलमानों का आक्रमण हमारी भारतीय अस्मिता को और अधिक बेचैन कर देती है। बेचैनी के ऐसे पीड़ादायक क्षणों में हमने अनेकानेक बाह्यचार ओढ़ लिए। वो सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियाँ जो पहले से ही जटिल थीं, अचानक उनमें गुणात्मक वृद्धि हो गई, दूसरे शब्दों में हम किसी दूसरे धर्म, जाति या संस्कृति से अपने को श्रेष्ठ बनाने के मोह में कठिन से कठिनतर होते गए। जब मंदिर टुटने शुरू हुए तो मंदिर निर्माण की बाढ़ आ गई। आक्रमणता के

क्षणों में या तो हम प्रतिक्रियावादी थे या सुरक्षात्मक और दोनों ही परिस्थितियाँ समस्याओं को हवा दे रही थी। निश्चित रूप से ऐसे ही क्षणों में कुछ हिंदी साहित्यकारों/विद्वानों की टिप्पणी थी कि भक्ति आंदोलन मुस्लिम आक्रमण की प्रतिक्रिया थी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लगभग तीन-चार सौ वर्षों तक चलने वाला भक्ति आंदोलन जैसा विराट आंदोलन किसी एक क्षण, एक कारण की उपज नहीं था बल्कि उसके उद्भव एवं विकास की कहानी इसके उन संस्कारों में लिखी है जो उसकी परिस्थितियों ने उसे सौंपे थे। विकास के जितने सोपान इसने तय किए उन सब में प्रथमतः एवं अंततः विषमताओं तथा अलगाववादी प्रवृत्तियों से छुटकारा पाने की और साथ ही लोक समन्वय तथा लोक मंगल जैसे भावों की स्थापना पर बल दिया जाता रहा। इस प्रकार से इतनी बड़ी कोशिश, करुणा और कर्तव्यनिष्ठा का अत्यंत सुंदर प्रयास कभी कबीर की क्रांतिकारी वाणी, कभी तुलसी की व्यवस्थावादी दृष्टि, कभी जायसी के सूफियाना प्रेम तो कभी सूर की मधुरता में तरह-तरह के रूप बदलता हुआ सामने आया।

*****

इतिहास के पन्नों से गायब 'महात्मा लटूरी सिंह'

राजेश कुमार पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सनातन धर्म में चतुर्मास व्रत चार महीने की अवधि के लिए होता है। आमतौर पर आषाढ़ मास में देवशयन एकादशी से शुरु होता है और कार्तिक माह में देव प्रबोधिनी एकादशी तक चलता है। इन महीनों को हिंदू पौराणिक कथाओं में सबसे पवित्र माना जाता है। इस अवधि के दौरान अधिकांश धार्मिक व्रत या महत्व की प्रासंगिकता के व्रत देखे जाते हैं। इस समय में श्री हरि विष्णु योगनिद्रा में लीन रहते हैं इसलिए किसी भी कार्य को करने की मनाही होती है।

पूर्व के समय में चूंकि लोग इस समय पर खाली रहते थे, विवाह आदि शुभ व मांगलिक कार्य नहीं किया जाता था, अतः इस समय पर नाट्य कलाकारों द्वारा नाटकों का मंचन किया जाता था। मेरठ में एक जमींदार थे, जिनका नाम चौधरी लटूरी सिंह था। भरा-पूरा परिवार था, बेटे थे, बहुएँ थीं। परिवार में किसी चीज की कोई कमी नहीं थी। उनको अभिनय का बड़ा शौक था। हर चौमास वो नाटक मंडली को गांव में बुलवाते और नाट्य कलाकारों के साथ खुद भी मंच पर अभिनय करते थे। एक बार उन्होंने नाट्य मंडली बुलवाई और राजा भर्तृहरि का नौ दिन का नाट्य मंचन शुरू हुआ। राजा भर्तृहरि का अभिनय खुद चौधरी लटूरी सिंह कर रहे थे। उनके परिवार के सभी सदस्य रोज नाटक देखने के लिए जाते थे। आठ दिन का नाट्य समाप्त हो चुका था। आठवे दिन भोजन करते हुए लटूरी सिंह ने अपनी पत्नी से कहा कि कल नाट्य का अंतिम दिन है, तुम नाट्य देखने मत आना। पत्नी ने पूछा कि केवल हमें ही नहीं जाना है कि परिवार का कोई सदस्य नहीं जाएगा। लटूरी सिंह ने कहा, नहीं, और जो लोग जाना चाहे जा सकते हैं परंतु तुम मत आना।

नौवें दिन मंच पर नाट्य शुरू हुआ। लटूरी सिंह के बेटे-बेटियाँ, बहुएँ सभी नाट्य देखने जा चुके थे। पत्नी घर पर अकेली रह गई। रह रह कर सोचती, मन भ्रम में पड़ा हुआ था कि जाएं या न जाएं। कई बार जाने के लिए उठती परंतु मन के किसी कोने से आवाज आती कि पति भी परमेश्वर होता है, आखिर उन्होंने कुछ सोच कर ही मना किया होगा, फिर बैठ जाती। फिर दूसरा मन बोलता अरे नहीं, हमने ऐसा कौन सा पाप किया है। घर के सभी लोग नाटक देखने के लिए गए हैं। हमी में ऐसी कौन सी कमी है जो हमको मना कर दिया गया। आखिरकार चौधराइन से नहीं रहा गया, सोचीं, कोई तो बात है जो मुझसे छुपाई जा रही है। फिर क्या था चौथराइन ने दरवाजे में कुंडी लगाई और मंच के सामने न जाकर रिश्ते में जेठानी लगने वाली महिला के घर की छत पर जाकर नाटक देखने लगी।

उधर मंच पर राजा भर्तृहरि के सन्यास लेने का दृश्य चल रहा था। भर्तृहरि बने लटूरी सिंह ने राजवस्त्र उतार कर भगवा धारण किया और बोलने लगे कि मैं अपने ह्रदय में बैठे भगवान शंकर, अग्नि और जल को साक्षी मानकर ये सौगंध लेता हूँ कि इसी वक्त से हर तरह की संपत्ति, राज्य सिंहासन आदि से त्याग करता हूँ। मेरी कोई संपत्ति नहीं है, मेरा कोई बेटा नहीं है, मेरी कोई बेटी नहीं है, मेरी कोई पत्नी नहीं है। यहाँ उपस्थित सभी स्त्रियाँ मेरी मां हैं। तभी लटूरी सिंह की भाभी छत से चिल्लाई, ओय लटूरी तेरी लुगाई इधर बैठी है। सब लोग हसने लगे। नाट्य की समाप्ति के बाद सभी कलाकारों ने अपने वस्त्र बदले लेकिन लटूरी सिंह भगवा वस्त्र ही धारण किए रहे। उन्होंने अभिनय के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला भिक्षा पात्र उठाया और सीधा अपने घर के दरवाजे पर पहुँचे। आवाज़ लगाई भिक्षा दो माता। भीतर से पत्नी निकल कर आई, अरे अभई तक आपने वस्त्र नहीं बदले। भीतर आइए, वस्त्र बदलिए, तबतक मैं भोजन लगा देती हूँ।

मैंने तुम्हें वहाँ आने से मना किया था क्योंकि जब मैं अभिनय करता हूँ तो मेरे भीतर शंकर स्वयं उपस्थित होते हैं। आज से तुम मेरी माता समान हो औऱ मैंने सन्यास ले लिया है। पत्नी रोने लगी, बच्चों ने मनाने का बहुत प्रयास किया लेकिन वो असफल रहे। चौधरी लटूरी सिंह ने गृहस्थ का त्याग कर दिया और महात्मा लटूरी सिंह के नाम से जाने गए। उनका नाम आर्य समाज के बड़े और अग्रणी प्रचारकों में लिया जाता है।

मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, गाज़ियाबाद, बुलंदशहर में चालीस से ज्यादा इंटर कॉलेज, डिग्री कॉलेज, आईटीआई कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज, मेडिकल कालेज चौधरी लटूरी सिंह जी द्वारा बनवाये हुए हैं। वहाँ प्रवेश द्वार पर बड़े- बड़े अक्षरों में लिखा है, इस कॉलेज का निर्माण महात्मा लटूरी सिंह जी ने करवाया है।

महात्मा लटूरी सिंह हिन्दू थे, योगी थे, सन्यासी थे और वो जीवन भर स्कूल बनवाते रहे। उन्होंने सरकार को नही कोसा बल्कि वो उठे और उन्होंने अपनी संपत्ति से, भिक्षा से, दान से स्कूल बनवाये।बाबा गोस्वामी जी महाराज दशरथ के लिए लिखते है कि रघुकुल रीत सदा चल आई, प्राण जाय पर वचन न जाई। परंतु नाट्य मंचन के दौरान दिये गए वचन का भी पालन करने वाले महात्मा लटूरी सिंह जी को शत शत नमन, वंदन।

*****

विश्व गौरैया दिवस

विनीता पाण्डेय,
पत्नी श्री नवीन कुमार पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विश्व गौरैया दिवस 20 मार्च को दुनियाभर में मनाने का उद्देश्य गौरैया पक्षी की लुप्त होती प्रजाति को बचाना है। पेड़ों की अंधाधुंध होती कटाई, आधुनिक शहरीकरण और लगातार बढ़ रहे प्रदूषण से गौरैया पक्षी विलुप्त होने के कगार पर पहुंच चुकी है। इस दिवस की थीम पिछले कुछ वर्षों से एक ही रही है कि, 'आई लव स्पैरोज' (गौरैया)। यह थीम इस दुनिया को पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों के लिए एक बेहतर जगह बनाने के सपने एवं उनके संरक्षण से प्रेरित है। एक वक्त था जब गौरैया की चीं-चीं की आवाज से ही लोगों की नींद खुला करती थी लेकिन अब ऐसा नहीं है। यह एक ऐसी पक्षी है जो मनुष्य के इर्द-गिर्द रहना पसंद करती है। गौरैया पक्षी की संख्या में लगातार कमी एक चेतावनी है कि प्रदूषण और रेडिएशन प्रकृति और मानव के ऊपर क्या प्रभाव डाल रहा है। गौरैया पृथ्वी पर सबसे आम और सबसे पुरानी पक्षी प्रजातियों में से एक है। ये छोटे, मनमोहक एवं शांति देने वाले पक्षी सदियों से हमारे जीवन का हिस्सा रहे हैं और प्रकृति में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत और दुनियाभर में गौरैया पक्षी की संख्या में लगातार कमी आ रही है। दिल्ली में तो गौरैया इस कदर दुर्लभ हो गई है कि ढूंढे से भी यह पक्षी देखने को नहीं मिलता, इसलिए वर्ष 2012 में दिल्ली सरकार ने इसे राज्य-पक्षी घोषित कर दिया था। गौरैया की लुप्त होती प्रजाति और कम होती आबादी बेहद चिंता का विषय है। दुनिया भर की कई संस्कृतियों में, गौरैया सादगी, खुशी और सुरक्षा का प्रतीक है। यह उनकी पारिस्थितिक भूमिका के अलावा हमारी साझा मानव संस्कृति और लोककथाओं में भी उनके महत्व को दर्शाता है। घरों को अपनी चीं-चीं से चहकाने वाली गौरैया अब दिखाई नहीं देती। इस छोटे आकार वाले खूबसूरत एवं शांतिपूर्ण पक्षी का कभी इंसान के घरों में बसेरा हुआ करता था। अब स्थिति बदल गई है। गौरैया के अस्तित्व पर छाए संकट के बादलों ने इसकी संख्या काफी कम कर दी है और कहीं-कहीं तो अब यह बिल्कुल दिखाई नहीं देती। इस नन्हें से परिंदे को बचाने के लिए ही पिछले कुछ सालों से विश्व गौरैया दिवस मनाते आ रहे हैं। पहली बार यह दिवस नेचर फॉरएवर सोसाइटी द्वारा भारत में गौरैया और अन्य सामान्य पक्षियों की घटती आबादी के बारे में जागरुकता बढ़ाने के लक्ष्य के साथ मनाया गया था। नासिक निवासी मोहम्मद दिलावर ने घरेलू गौरैया पक्षियों की सहायता हेतु नेचर फोरेवर सोसाइटी की स्थापना की थी। इनके इस कार्य को देखते हुए टाइम ने 2008 में इन्हें हिरोज ऑफ दी एनवायरमेंट नाम दिया था। पर्यावरण के संरक्षण और इस कार्य में मदद की सराहना करने हेतु एनएफएस ने 20 मार्च 2011 में गुजरात के अहमदाबाद शहर में गौरैया पुरस्कार की शुरुआत की थी। यह धरती केवल इंसानों के लिये नहीं है, बल्कि वन्य जीवों के लिये भी है, इसलिये पक्षियों का विलुप्त होना या मरना हमारे लिये चिन्ता का बड़ा कारण बनना चाहिए। पक्षी विज्ञानी हेमंत सिंह के अनुसार गौरैया

की आबादी में 60 से 80 फीसदी तक की कमी आई है। यदि इसके संरक्षण के उचित प्रयास नहीं किए गए तो हो सकता है कि गौरैया इतिहास का प्राणी बन जाए और भविष्य की पीढ़ियों को यह देखने को ही न मिले।

ब्रिटेन की 'रॉयल सोसायटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्डस' ने भारत से लेकर विश्व के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर गौरैया को 'रेड लिस्ट' में डाला है। आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक गौरैया की आबादी में करीब 60 फीसदी की कमी आई है। गौरैया का भौगोलिक दायरा बहुत बड़ा है। वे अंटार्कटिका को छोड़कर हर महाद्वीप के मूल निवासी हैं और विभिन्न जलवायु और वातावरण में रहने के लिए अनुकूलित हैं। कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए पक्षियों का शिकार एवं अवैध व्यापार जारी है। गौरैया जैसे पक्षी विभिन्न रसायनों और जहरीले पदार्थों के प्रति अति संवेदनशील होते हैं। ऐसे पदार्थ भोजन या फिर पक्षियों की त्वचा के माध्यम से शरीर में पहुंचकर उनकी मौत का कारण बनते हैं। भोजन की कमी होने, घोंसलों के लिए उचित जगह न मिलने तथा माइक्रोवेव प्रदूषण जैसे कारण इनकी घटती संख्या के लिए जिम्मेदार हैं। जन्म के शुरुआती पंद्रह दिनों में गौरैया के बच्चों का भोजन कीट-पतंग होते हैं। पर आजकल हमारे बगीचों में विदेशी पौधे ज्यादा उगाते हैं, जो कीट-पतंगों को आकर्षित नहीं कर पाते। गौरैया देशी पौधों वाले क्षेत्रों में पनपती है, तो क्यों न हम अपने बगीचे में कुछ पौधे लगाकर गौरैया को नया जीवन देने का उपक्रम करें।

जीवन के अनेकानेक सुख, संतोष एवं रोमांच में से एक यह भी है कि हम कुछ समय पक्षियों के साथ बिताने में लगाते रहे हैं, अब ऐसा क्यों नहीं कर पाते? क्यों हमारी सोच एवं जीवनशैली का प्रकृति-प्रेम विलुप्त हो रहा है? मनुष्य के हाथों से रचे कृत्रिम संसार की परिधि में प्रकृति, पर्यावरण, वन्यजीव-जंगल एवं पक्षियों का कलरव एवं जीवन-ऊर्जा का लगातार खत्म होते जाना जीवन से मृत्यु की ओर बढ़ने का संकेत है। खुद को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेने वाली यह चिड़िया अब भारत ही नहीं, यूरोप के कई बड़े हिस्सों में भी काफी कम रह गई है। ब्रिटेन, इटली, फ्राँस, जर्मनी और चेक गणराज्य जैसे देशों में इनकी संख्या जहाँ तेजी से गिर रही है, तो नीदरलैंड में तो इन्हें 'दुर्लभ प्रजाति' के वर्ग में रखा गया है।

मोबाइल फोन तथा मोबाइल टॉवरों से निकलने वाली सूक्ष्म तरंगें गौरैया के अस्तित्व के लिए खतरा बन रही हैं। कई बार लोग अपने घरों में इस पक्षी के घोंसले को बसने से पहले ही उजाड़ देते हैं। पक्षी विज्ञानियों के अनुसार गौरैया को फिर से बुलाने के लिए लोगों को अपने घरों में कुछ ऐसे स्थान उपलब्ध कराने चाहिए, जहां वे आरंगनी से अपने घोंसले बना सकें और उनके अंडे तथा बच्चे हमलावर पक्षियों से सुरक्षित रह सकें। भारत की संस्कृति में पक्षियों को दाना एवं पानी डालने की व्यवस्था जीवनशैली का अंग रहा है, इन वर्षों में हमारी यह संस्कृति लुप्त हो रही है, जो गौरेया के विलुप्त होने का बड़ा कारण है। मनुष्य का लोभ एवं संवेदनहीनता भी त्रासदी की हद तक बढ़ी है, जो वन्यजीवों, पक्षियों, प्रकृति एवं पर्यावरण के असंतुलन एवं विनाश का बड़ा सबब बना है। ऐसे में इस दिन को मनाने के बारे में सोचना वाकई गौरैया और दूसरे गायब होते पक्षियों की सुरक्षा व संरक्षण के लिए सराहनीय कदम है।

लिंग भेद मिटाने में डिजिटल विकास की भूमिका

पारुल पाण्डेय,
पुत्री श्री नवीन कुमार पाण्डेय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अभी का युग डिजिटल युग है, जिसमें हम अपनी आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा कर सकते हैं। अब हमारे लिए सभी बाधाएं छोटी पड़ गई हैं। अब उच्च शिक्षा प्राप्त करना आसान हो गया है। जिस तरह से लड़कियां घर में ही रह कर अपनी शिक्षा प्राप्त करने का ख्वाब पूरा कर रही है, इसी प्रकार सभी लड़कियां अपनी आगे की पढ़ाई पूरी कर सकती हैं। अब तो उच्च शिक्षा के लिए लड़की को बाहर भेजने की चिंता भी दूर हो गई है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) में दाखिला लेकर लड़कियां ऑनलाइन पढ़ाई कर अपने सपने को पूरा कर रही है।दरअसल, डिजिटल युग के आगमन ने समाज के सभी पहलुओं में परिवर्तनों की शुरुआत की है, जिसका एक उल्लेखनीय प्रभाव लिंग भेद पर भी पड़ा है। प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग की विशेषता वाले डिजिटल प्रभुत्व ने सभी बाधाओं को तोड़ने और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डिजिटल प्रौद्योगिकी की प्रगति ने जीवन के सभी पहलुओं में क्रांति ला दी है। शैक्षिक परिदृश्य में तो इसकी भूमिका विशेष रूप से प्रमुख है, जो दुनिया भर में महिलाओं और किशोरियों के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान कर रही है। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों ने लड़कियों के लिए शिक्षा तक पहुंच को आसान बना दिया है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में लड़कियों को अपने शैक्षिक प्रयासों को आगे बढ़ाने में मदद मिल रही है।

जैसा कि सभी जानते हैं कि भारत में अधिकांश ग्रामीण लोगों की वित्तीय स्थिति और लड़कों की तुलना में लड़कियों की शिक्षा पर खर्च के प्रति समाज का नकारात्मक रवैया रहा है. ऐसे में अधिकांश किशोरियों की उच्च शिक्षा खतरे में रही है। वित्तीय और सामाजिक परिस्थितियों के कारण 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद अधिकांश लड़कियों की शादी आम प्रचलन है, जिससे वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के अपने सपनों को पूरा करने में असमर्थ रहती हैं। ऐसे में डिजिटल माध्यम (इंटरनेट) के ज़रिये अपने सपनों को पूरा करना उनके लिए एक सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।कुछ गांवों में तथा शहर के गरीब तबकों की कुछ स्नातक की पढ़ाई करने वाली पहली लड़कियों ने न केवल अपने परिवार की बाकी लड़कियों के लिए बड़े सपने देखने का मार्ग प्रशस्त किया है, बल्कि उन्हें यह भी बताया कि उन्हें भी अपने परिवार के लड़कों के समान शिक्षा का पूरा अधिकार है। लड़कियां अब अपनी पढ़ाई के साथ साथ विभिन्न प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारियां भी कर रही है और उसे पूरी उम्मीद है कि एक दिन वह अपने पैरों पर खड़ा होने और सशक्त बनने के अपने सपने को पूरा करेगी और उन्हें उम्मीद है कि एक दिन वह भी आत्मनिर्भर बनेगी और खुद को सामाजिक बंधनों से मुक्त कर लेगी ।

डिजिटल प्रगति ने शिक्षा के साथ साथ रोजगार परिदृश्य को भी नया आकार दिया है, जिससे महिलाओं को विभिन्न उद्योगों में प्रवेश करने के नए रास्ते उपलब्ध हुए हैं। डिजिटल कनेक्टिविटी से संभवहुए दूरस्थ कार्य ने महिलाओं के लिए अवसर के नए द्वार खोल दिए हैं. इससे उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए व्यक्तिगत कार्यबल में अधिक सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर मिला है। इसमें इंटरनेट की बहुत बड़ी भूमिका है. गूगल जूम मीटिंग और व्हाट्सएप जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म इसमें मदद करते हैं. इसकी वजह से आप हमेशा अपनी टीम से जुड़ी हुई रहते है। चाहे वे कहीं भी हों, अपने क्षेत्र के बारे में लिख सकते हैं और समाचार पत्रों के माध्यम से देश भर के लोगों तक उनके मुद्दे पहुंच सकते हैं. यदि इंटरनेट और डिजिटल विकास नहीं होता, तो लोग गांव के बाहर की दुनिया तक पहुंच नहीं पाते और आज इतना आत्मनिर्भर और स्वतंत्र नहीं बन पाते ।इतना ही नहीं, डिजिटल प्लेटफॉर्म ने आज उद्यमिता के क्षेत्र में भी महिलाओं को समान अवसर प्रदान किया है और उन्हें अपने व्यवसाय को लॉन्च करने और बढ़ावा देने के लिए एक पहचान दी है. ई-कॉमर्स, सोशल मीडिया और ऑनलाइन मार्केटिंग ने उनके सामने आने वाली सभी बाधाओं को समाप्त कर दिया है, जिससे महिला उद्यमियों को वैश्विक स्तर तक पहुंचने में मदद मिली है. ग्राहकों से जुड़ने, लेनदेन का प्रबंधन करने और उत्पादों या सेवाओं को डिजिटल रूप से बढावा देने की क्षमता, महिलाओं के लिए व्यवसायों में गेम चेंजर साबित हुई है। पेटीएम और नेट बैंकिंग का इस्तेमाल करने से व्यापारिक लेन-देन बहुत आसान लगता है जबकि पहले इस काम के लिए घर के पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था। निश्चित रूप से डिजिटल दुनिया लिए कई समस्याओं का समाधान बनकर आई है। डिजिटल प्रभुत्व ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर महिलाओं की आवाज़ को बुलंद किया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म समर्थन के लिए एक मंच प्रदान कर रहा है, जिससे महिलाओं को अपने अनुभव साझा करने, जागरूकता बढ़ाने और लैंगिक समानता के लिए समर्थन जुटाने में मदद मिल रही है। डिजिटल उन्नति ने देश के सुदूर ग्रामीण इलाकों में बैठी किशोरियों के लिए भी अवसरों के द्वार खोल दिए हैं. अब इनके लिए सभी बाधाओं को पार करना आसान हो गया है। हालांकि, सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समाज में रहने के बावजूद बहुत साड़ी महिलाएं और किशोरियां कई तरह से अपने संघर्षों का सामना कर रही हैं। तमाम बाधाओं के बावजूद उन्होंने इसे पार किया और आज उन लड़कियों के लिए सफलता की एक मिसाल बन गई हैं जो यह सोचती हैं कि देश के सुदूर इलाके में रहने के कारण उन्हें मौका नहीं मिल पाता है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों को उद्यमिता और सामाजिक सशक्तिकरण में बदलने से लेकर डिजिटल विकास ने एक समावेशी और न्यायसंगत दुनिया को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं, लेकिन इसके बावजूद उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं में प्रौद्योगिकी का निरंतर एकीकरण आगे के विकास के लिए आशाजनक रास्ते प्रदान करता है। डिजिटल विकास के माध्यम से लिंग भेद को समाप्त करने की यह एक शुरुआत मात्र है। अब यहसुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि डिजिटल प्रभुत्व के लाभ समाज के सभी वर्गों के लिए सुलभ हो।

कोविड-19 और संसार

संदीप कुमार पाठक,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना महामारी ने आज दुनिया को सबक सिखाया है और भारत के लिए असंख्य अवसर परिलक्षित किए हैं। देश में कोरोना से लड़ने के लिए लॉकडाउन के दौरान अपने राष्ट्र के नाम संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'आत्मनिर्भर भारत' का अभियान शुरू करते हुए 20 लाख करोड़ रुपए के आर्थिक पैकेज की घोषणा की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आर्थिक पैकेज आत्मनिर्भर अभियान की अहम कड़ी के रूप में कार्य करेगा। ये पैकेज भारत की जीडीपी का करीब-करीब 10%है जो 2020 में देश की विकास यात्रा को, आत्मनिर्भर भारत अभियान को एक नई गति देगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि "संकट के समय में, लोकल ने ही हमें बचाया है। समय ने हमें सिखाया है कि लोकल को हमें अपना जीवन मंत्र बनाना ही होगा। आपको आज जो ग्लोबल ब्रांड्स लगते हैं वो भी कभी ऐसे ही बिल्कुल लोकल थे। आज से हर भारतवासी को अपने लोकल के लिए वोकल बनना है, न सिर्फ लोकल प्रॉडक्ट खरीदने हैं, बल्कि उनका गर्व से प्रचार भी करना है।" वोकल फॉर लोकल के लिए हमारी भारतीय भाषाएँ अहम भूमिका अदा कर सकती हैं। भारतीय भाषाओं में अपार संभावनाएँ हैं। भारतीय भाषाओं से राष्ट्रीय एकीकरण की भावना को बल मिलता है। प्रधानमंत्री ने अपने पूरे भाषण में 'देश को आत्मनिर्भर बनाने' पर सारा ज़ोर दिया, उन्होंने कहा कि ये पाँच स्तंभों पर आधारित होगा: अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचा, प्रणाली, जीवंत लोकतंत्र और माँग।

अर्थव्यवस्था-2.7 ट्रिलियन डॉलर की भारत की अर्थव्यवस्था में भारतीय भाषायों के योगदान से जीडीपी और बढ़ जाएगा। भारतीय भाषाओं की मदद से भारत अपनी विविधताओं का इस्तेमाल कर विश्वगुरु की उपाधि हासिल कर सकता है और आत्म इरभर भारत के सपने को साकार कर सकता है।

इन्फ़्रास्ट्रक्चर यानी बुनियादी ढाँचा-चीन के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए, भारत को अपनी सार्वभौमिक विविधता यानि संस्कृति, संस्कार, सभ्यता, बोलियों और भाषायों को आकर्षण का केंद्र बनाना होगा। निवेशको आकर्षित करने के लिए भारत को सॉफ्ट पावर का इस्तेमाल करना होगा। भारत में विदेशी कंपनियों के लिए हमेशा से एक बाधा बुनियादी ढांचे की कमी रही है उसका एक मात्र कारण देश की विविधता रही है। देश के एक हिस्से की विशेषताओं का इस्तेमाल देश के दूसरे हिस्से में किया जा सकता है कमी केवल समन्वय स्थापित करने की है। यहाँ भारतीय भाषायों की महत्ता अनिवार्य है क्योंकि भारतीय भाषाएँ असमानता को मिटाने में कारगर साबित हो सकती हैं।

सिस्टम यानी प्रणाली- पीएम ने प्रौद्योगिकी के इष्टतम उपयोग की बात कही है। उनकी सरकार ने कुछ सही क़दम उठाये हैं जिसमें अत्याधुनिक तकनीक को अपनाना और समाज में डिजिटल तकनीक का उपयोग बढ़ाना शामिल है। यह अर्थव्यवस्था का चालक साबित हो सकता है। साथ ही भारतीय भाषाओं की मदद से सूचना का प्रवाह अधिक सुलभ हो जाएगा। जहां डिजिटल प्रौद्योगिकी में भारतीय भाषाओं के इस्तेमाल से अर्थव्यवस्था को ताकत दी जा सकती है।

वाइब्रेंट डेमोक्रेसी यानी जीवंत लोकतंत्र - लोकतंत्र भारत की ताक़त के साथ-साथ विशेषता है और जहाँ चीन भारत का मुक़ाबला नहीं कर सकता है। वे उद्यमी और निर्माता जो लोकतंत्र के मूल्यों को महत्व के साथ आत्मसात करते हैं, वो साम्यवादी चीन के स्थान पर भारत के साथ डील करना चाहेंगे। भारतीय भाषाओं का योगदान हमारे लोकतन्त्र को सशक्त करने में मददगार साबित हो सकता है।

डिमांड यानी मांग-सच्चाई ये है कि भारत का क्षेत्रीय बाज़ार अनेक संभावनाओ से भरा हुआ है और वैश्विक स्तर पर भी आकर्षण का केंद्र है। भारतीय बाजार में मांग की कमी नहीं है। इन मांगों को पूरा करने में भारतीय छोटे और मध्यम उद्यमियों की भूमिका अहम हो जाती है। इनके मध्य संपर्क स्थापित करनें में भारतीय भाषायों की भूमिका भी अवश्यंभावी है।

इतिहास की गहराइयाँ अभी इतनी कोमल हैं मानो स्वदेशी के सिद्धांत को समझाते हुए महात्मा गांधी ने जो कुछ कहा था आज के आधुनिक युग में भी प्रासंगिक है। अगर हम स्वदेशी के सिद्धांत का पालन करें, तो हमारा और आपका यह कर्तव्य होगा कि हम उन बेरोजगार पड़ोसियों को ढूंढे, जो हमारी आवश्यकता की वस्तुएं, हमें दे सकते हैं और यदि वे इन वस्तुओं को बनाना न जानते हों तो उन्हें उसकी प्रक्रिया सिखायें। ऐसा हो तो भारत का हर एक गांव लगभग एक स्वाश्रयी और स्वयंपूर्ण इकाई बन जाए।दूसरे गांव के साथ वह उन चंद वस्तुओं का आदान-प्रदान जरूर करेगा, जिन्हें वह खुद अपनी सीमा में पैदा नहीं कर सकता। आत्म निर्भर भारत भी इसी की स्वरूप है जहां भारतीय भाषाएँ अपनी अपनी भूमिका को अदा करें। भारत को अपने आर्थिक संकटों की वजह से साल 1991 में बाहरी दुनिया के लिए अपने दरवाज़े खोलने पर मजबूर होना पड़ा। आज भारत एक बार फिर 'आत्म-निर्भर' बनने के लिए भीतर की ओर देख रहा है|

मुद्रा की तरह, भाषा भी केवल विनिमय का एक माध्यम है, अन्य मनुष्यों के साथ बातचीत करने का माध्यम। भाषा ज्ञान नहीं है। केवल ज्ञान का आदान-प्रदान करने का एक साधन। यह हमारे नेताओं की मधुरता, बेईमानी, और ठगी का प्रमाण है कि अंग्रेजी हमारे देश में ज्ञान का विकल्प बन गई है। जिस तरह पिछले 1000 सालों से हमारे कुलीन वर्ग हमें सभी अधिकारों से वंचित करके हमें बंधन में रख रहे थे, उसी तरह हमें बंधन में रखने के लिए अंग्रेजी का इस्तेमाल किया गया है। और फिर ध्यान से अंग्रेजी बनाम भारतीय भाषाओं के बजाय हिंदी बनाम अन्य भारतीय भाषाओं में बहस को मोड़ दिया। जिस तरह वस्तु विनिमय व्यापार अक्षम है और विनिमय

के माध्यम के साथ व्यापार की तुलना में बहुत छोटे पैमाने से आगे नहीं बढ़ सकता है, इसलिए यह हमारे साथ हो गया है। हमारी अपनी भाषाओं को अवैध टेंडर प्रदान किया गया है, जैसे कि यूरोप में रुपया कहा जाता है, और मुद्राओं के विपरीत, भाषाओं को काउंटर में नहीं बदला जा सकता है। भारत सांस्कृतिक विविधता के साथ ही साथ भाषाई विविधता वाला देश है। कोस-कोस पर बदले पानी चार कोस पर बदले वाणी की कहावत इसी परिपेक्ष्य में प्रचलित रही है। किसी भी भाषा का विकास उसके साहित्यिक इतिहास पर निर्भर करता है। आज के आधुनिक युग में जहां संसार के अनेक देश अपनी-अपनी भाषाओं में तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ अनुसंधान का कार्य भी कर रहे हैं। वहीं भारत को भी उन देशों से सीख कर आत्म निभार भारत में तकनीकी के युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग और अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं में काम को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति को आत्मसात किया जा सके ताकि क्षेत्रीय स्तर पर सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। आत्म निर्भर भारत की संकल्पना में हमें यह अनिवार्य करना होगा की अंग्रेजी के साथ साथ हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीकी ज्ञानका संवर्धन करने हेतु इससे संबंधित साहित्य का सरलतम रूप प्रस्तुत करना होगा और इससे संबंधित साहित्यिक अनुवाद सरलतम होना चाहिए। इसके लिए राजभाषा हिन्दी के अनुरूप अन्य भारतीय भाषायों के लिए भी क्षेत्रीय राजभाषा विभाग का निर्माण करना होगा जो आत्म निर्भर भारत को चार चाँद लगाएगा। विभिन्न स्तरों पर कार्यक्रमों के द्वारा भारतीय भाषायों में मौलिक लेखन और अन्य गतिविधियों बढ़ावा दिया जाना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों में विद्यार्थियों को क्षेत्रीय स्तरों पर संबंधी पुस्तकें भारतीय भाषायों में मुहैया करना होगा। भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षित युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना होगा। भारतीय भाषायें आपस में बहनें बनकर देश की एकता और अखंडता के सूत्र को चरितार्थ कर सकती हैं। सभी भारतीय भाषाओं की बड़ी बहन की पदवी हिंदी या कहें संस्कृत से निकली हिन्दी को देना हिन्दी भाषा पर कर्तव्यों का बोध कराती है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के उपयोगी को शब्दों में पिरोकर अपने में समाहित कर सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा सकती है और आत्म निर्भर भारत के लक्ष्य को चरितार्थ करती है।

हिंदी भारतीय परिदृश्य में जन-आंदोलनों की भाषा रही है अब बारी अन्य भारतीय भाषाओं की है आत्म निर्भर भारत में ये अन्य भारतीय भाषाएँ अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगी। आत्म निर्भर भारत को देखते हुए तकनीकी कंपनियां भारतीय भाषाओं में अपने कार्य का निष्पादन करतें हैं और इन्हें बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं। यह अद्भुत है कि आत्म निर्भर भारत के अंतर्गत सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया जा रहा है। आज वैश्वीकरण के दौर में, अंग्रेजी का वर्चस्व क़ाबिज़ है आत्म निर्भर भारत योजना के अंतर्गत विश्व स्तर भारत को अपनी क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ साथ अपनी क्षेत्रीय भाषायों को प्रभावशाली बनाना होगा ताकि भारत विश्व गुरु बनने के सपने को साकार कर सके। आज संसार कोरोना से जूझ रहा है वहीं हमारे देश के प्रधानमंत्री ने आत्म निर्भर भारत बनने का संकल्प सभी देशवासियों को कराया है। और दुनिया को याद दिलाया है कि भारत चाहे तो क्षेत्रीय स्तरों पर होने वाले विनिर्माण कि

बदौलत अपनी जरूरतों को पूरा कर सकता है। जिस प्रकार से संस्कृतियों का वर्षों से अंतर्संबंध रहा है उसी तरह से भाषाई अंर्तसंबंध भी रहा है, लेकिन इस अंतर्संबंध को हमने कभी गहराई से समझने का प्रयत्न किए ही नहीं। यह महर्षि दयानंद और महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता के बहुत पहले ही समझ लिया था। इतना ही नहीं, अंग्रेजी के सम्मोहन में बंधे भारतीयों की मनःस्थिति का अनुभव भी कर लिया था। अंग्रेजी का खतरा केवल हिंदी के लिए ही नहीं अपितु भारतीय भाषाओं पर ही उसी तरह से है। यह अंग्रेजी भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण की दें है जहां सभी अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करना चाहतें है बेशक उन्हें उसके लिए अपनी पहचान ही क्यों न गवनी पड़े। यहाँ बात भारतीय भाषाओं के पहचान को कायम रखने की है।विश्व आज जिस दौर से गुजर रहा है, उसमें कई स्तरों पर बदलाव आए हैं। भूमंडलीकरण के कारण लोगों के सांस्कृतिक, भाषाई और देशज सोच में बदलाव आए हैं। भारतीय समाज में इस बदलाव का असर कहीं अधिक देखा जा रहा है। जिससे लोगों में मूल्यों से अधिक सुख-सुविधाओं के प्रति कहीं ज्यादा मोह बढ़ा है। पैसा जीवन का पर्याय बन गया है। सांस्कृतिक और भाषाई चेतना धीरे-धीरे बदलती या गायब होती दिखाई पड़ रही है। ऐसे में सांस्कृतिक और भाषाई चेतना को लेकर संकट महसूस होना लाजमी है।

गांधी कहते है कि “आप और हम चाहते हैं कि करोड़ों भारतीय आपस में अंर्तप्रांतीय संपर्क कायम करें। स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा दर पीढ़ियाँ गुजर जाने के बाद भी हम परस्पर संपर्क स्थापित न कर सकेंगे।” ऐसे में डॉ. रामविलास शर्मा का यह कथन कितना प्रासंगिक हो जाता है कि “हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले, इसकी बजाए यह वातावरण बनाना चाहिए कि सभी भारतीय भाषाएँ अंग्रेजी का स्थान लें।” सुब्रह्मण्यम भारतीय ने भी कहा था कि “भारत माता भले ही 18 भाषाएं (अब 22 हो गई हैं) बोलती हों फिर भी उसकी चिंतन प्रक्रिया एक ही है।”

आज भूमण्डलीकरण का दौर है और वैश्वीकरण के इस आधुनिक युग में जहां स्थानीय विशेषताएँ खोजी जा रही है और आधुनिकता के नाम पर हम भारतीय केवल नकल करने में लगे है। आज भाषा-संस्कृति की अहमियत बाजारवाद और पूंजीवाद के समक्ष संकीर्ण व छोटी लगती है। लेकिन हमें आत्म निर्भर भारत में इस बात को महत्व देना होगा कि भारतीय भाषाओं के अंतर्संबंध तथा भारतीय संस्कृति की विराटता को कोई शक्ति धूमिल नहीं कर सकती है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान को बनाए रखने के लिए इस संबंध को समझना और जीना होगा। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रहेगा। भाषा के बिना न तो किसी देश की कल्पना की जा सकती है और न तो किसी समाज की। इस लिए भाषा की उपेक्षा का मतलब स्वयं अपने अस्तित्व को ही नकारना। डॉ. बुल्के कहते हैं कि भारत पहुँचकर मुझे यह देखकर दुख हुआ कि बहुत से शिक्षित लोग अपनी ही संस्कृति से नितांत अनभिज्ञ हैं और अंग्रेजी बोलना तथा विदेशी सभ्यता में रंग जाना गौरव की बात समझते हैं। ठीक यही देश की अर्थव्यवस्था में भी दिखाई देता है जहां स्थानीय अवसरों और विशेषताओं की अनदेखी कर आंखे बंद किए केवल भूमंडलीकरण की आड़ में देश को ले जा रहे है। यहाँ भारीत्य भाषाओं और देश की अर्थव्यवस्था दोनों के बीच एक समन्वय स्थापित कर हमें आत्म निर्भर बनने की राह तैयार करनी होगी।

*****

अच्छाईयों का सागर

विजय कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कितना अच्छा हो अगर चेहरे के साथ भीतर के भाव भी दिखाई देने लगें। दूसरों की आँखं की नमी देख हम भावुक हो जाते हैं, लेकिन भीतर में व्याप्त अच्छाईयाँ दिखने लग जाएं तो शायद यह विश्व अलग ही हो। कहते हैं, एक सुंदर दिल का होना हजारों सुंदर चेहरों से बेहतर है, लेकिन ऐसा न होने का कारण हमारी अज्ञानता व भटकन है। कबीर दास ने शायद आदमी की इसी अज्ञानता पर ही कहा था पानी में मीन पियासी, मोहे सुन-सुन आवे हांसी। कोई वस्तु आपके हाथ में हो और आप उसे खोजें, दूसरों से पूछें तो लोग हसेंगे। कस्तूरी की सुगंध से भ्रमित मृग इधर-उधर भाग कर उसे ढूंढे तो इसकी अज्ञानता पर आदमी हंसता है, लेकिन अपने भीतर समाहित अच्छाइयों के सागर को आदमी यदि बाहर ढूंढता है तो सारे पशु जगत को उस पर हंसना चाहिए।

जब हम अपने भीतर देखने की कला में निपुण हो जाते हैं, तो हमारे जीवन का एक नया आयाम सामने आता है लेकिन भीतर से अनजान आदमी ज्यादातर बाहर को ही देखता है। अपने भीतर देखने की उसकी कोई रूचि नहीं है। भीतर देखने की रुचि लाखों में किसी एक की जागती है और यह भी सच है कि भीतर जिसने एक बार देख लिया, बाहर का सारा आकर्षण उसके लिए समाप्त हो जाएगा। बाहर की दुनिया में रहने की उसकी आदत छूट जाएगी। फिर ऐसे लोग अधिकांश समय समाधि की अवस्था में ही रहना पसंद करेंगे।

अच्छी आदत सीखने के पीछे कोई विशेष तरह का विज्ञान नहीं है जिससे आप आगे चलकर एक अच्छे इंसान बन सकें। ये काफी हद तक सच है कि आपका हृदय कभी भी आपको विचलित नहीं करता है, जब भी आपको कुछ आपको असमान्य लगता है, आप खुद से पुछिए कि क्या आप कुछ कर सकते हैं? अगर अंदर से जवाब आता है कि हाँ, तो आप कीजिए।

अच्छी आदतें बनाने का ये मतलब कभी नहीं होता है कि आप सिर्फ उन्हीं लोगों की मदद करें जिन्हें आप जानते हों। असल में एक अच्छा इंसान एक अच्छे तरीके से हर किसी की मदद करता है। मान लीजिए आपने एक गरीब बुढ़ी औऱत को देखा और वो आपसे कुछ पैसे और भोजन मांग कर रही है। तब यह बेहद स्वाभाविक है कि आप उसकी मदद करें और आपका हृदय भी ऐसा करने के लिए हाँ कहता है। तो, इस तरह के छोटे कदम भी आपको एक अच्छा इंसान बना सकता है। बाहरी दुनिया में रहने से बुराईयाँ प्रबल बनती हैं। क्रोध, लोभ, मोह, भय, अहंकार, घृणा के भाव आते हैं। यह भाव ही हिंसा है, जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है। खुद को भूल दूसरों को देखने से हीन भावना या अहंकार की भावना जागती है। जब हम भीतर देखते हैं तो केवल स्वयं दिखाई देता है, कोई पर दिखाई नहीं देता। ऐसे लोगों का जीना सार्थक होता है। आप कितने साल जिए यह अहम नहीं है, बल्कि इन वर्षों में आपने कितनी जिंदगी जी यह मायने रखता है।

*****

प्राकृतिक संसाधनों का दोहन एवं परिणाम

बबिता मणि,

कनिष्ठ अनुवादक

प्राकृतिक संसाधनः-प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन हैं जिन्हें ग्रहों द्वारा मानवीय हस्तक्षेप के बिना सभी जीवों को प्रदान किया गया है। प्राकृतिक संसाधन पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। प्राकृतिक संसाधन वे संसाधन हैं जो प्रकृति से हमें बिना किसी भेद-भाव के प्राप्त हुए हैं जिनमें कुछ संशोधन करने के उपरांत उपयोग किए जाते हैं। प्राकृतिक संसाधन मानव जाति को प्राकृतिक विरासत के रूप में प्राप्त हुए हैंजो प्रकृति की गोद में भंडार के रूप में संरक्षित हैं। प्राकृतिक संसाधनों को ऐसे सामग्रियों एवं घटकों के रूप में देखा जाता हैं जिसका उपयोग पृथ्वी पर रहने वाले हर जीव अपने लिए अपनी सुविधानुसार करता है।

पर्यावरण के भीतर पायी जानी वाली हर चीज मानव जाति के लिए मुफ्त में उपलब्ध है। मानव द्वारा निर्मित प्रत्येक उत्पाद मौलिक स्तर पर प्राकृतिक संसाधनों से बना होता है। देखा जाए तो मनुष्य अपने हर बुनियादी जरुरतों को पूरा करने लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है लेकिन इसके बावजूद भी वो प्राकृतिक संसांधनों को बहुत ही तीव्र गति से खत्म कर रहा है। यही नहीं अध्ययन से यह भी पता चला है कि कोई ऐसा नहीं है जिसने प्राकृतिक संसंधानों का दोहन किए बिना अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा किया हो। हमें बचपन में पढ़ाया गया कि प्रकृति संसाधनों का निर्माण बहुत ही धीमी गति से होता हैं यदि हम उनका विवेकपूर्ण तरीके से प्रयोग नहीं करेंगे तो वो बहुत जल्द ही समाप्त हो जाएंगे। लेकिन शायद यह बात सिर्फ किताबों तक ही सीमित होकर रह गयी है।

प्राकृतिक संसाधनों के प्रकारः-वैसे तो प्रकृति द्वारा प्रदान की जाने वाली वस्तुओं का कोई निर्धारित वर्गीकरण करना आसान नहीं है फिर भी उत्पत्ति, विकास, नवीकरणीयता एवं स्वामित्व के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों के प्रकार निम्नवत् हैः-

उत्पत्तिः- उत्पत्ति के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों के निम्न क्रम हैः-

जैविकः- ऐसे संसाधन जो जैवमंडल से उत्पन्न होते हैं वो जैविक संसाधन कहलाते हैं। जैसे वनस्पति, जीव, आदि। जीवाश्म, ईंधन को भी जैविक संसाधनों की श्रेणी में शामिल किया गया है क्योंकि वे सड़न के उपरांत जैव पदार्थ में बदलते हैं।

अजैविक: अजैविक संसाधन वे संसाधन होते हैं जो निर्जीव और आकार्बनिक पदार्थों द्वारा उत्पन्न होते हैं। इनमें भूमि, ताजा जल, वायु, मृदा तत्व आदि शामिल हैं।

विकास का अवस्थाः-विकास की बात अगर की जाए तो जितनी तेजी से हम प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग कर रहे हैं उतनी तीव्र गति से उनका विकास नहीं हो रहा है क्योंकि प्रकृति अपने नियमानुसार ही सतत गति से अपने संसाधनों को व्यवस्थित करती है। बिना बिचार किए आगे बढ़ना तो हम मानवों का काम है। प्राकृतिक संसाधनों के विकास क्रम निम्न प्रकार हैः-

संभावित संसाधन: ऐसे संसाधन जो अस्तित्व में तो हैं, लेकिन अभी तक उनका उपयोग नहीं किया गया है लेकिन भविष्य में इन संसाधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है को संभावित संसाधन कहते हैं। उदाहरण के लिए अवशादी शैल आदि। क्योंकि जब तक इन्हें बाहर नहीं निकाला जाता और उपयोग में नहीं लाया जाता तब तक यह एक संभावित संसाधन बना रहता है।

वास्तविक संसाधन: ऐसे संसाधन, जो परिमाणित और योग्य हैं तथा वर्तमान में विकास में प्रयोग किए जा रहे हैं, को वास्तविक संसाधन कहते हैं। ये संसाधन आम तौर पर प्रौद्योगिकी और उनकी व्यवहार्यता के स्तर पर निर्भर होते हैं।

आरक्षित संसाधन: आरक्षित संसाधन वह संसाधन है जो वास्तविक संसाधन का भाग होते हैं तथा जिसे भविष्य में विकसित कर उनसे लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

संग्रहित संसाधन: ऐसे संसाधन, जिनका सर्वेक्षण तो किया जा चुका है लेकिन तकनीकी कमियों के कारण उनका उपयोग कर पाना संभव नहीं है, को संग्रहित संसाधन कहते हैं।

नवीकरणीयताः- नवीकरणीयता के आधार पार प्राकृतिक संसाधनों का विवरण निम्नवत् हैः-

नवीकरणीय संसाधनः-जिन संसाधनों की प्राकृतिक रूप से पूर्ति की जा सकती है उन्हें नवीकरणीय संसाधन की श्रेणी में रखा जाता है। इनमें से कुछ संसाधन जैसे सौर ऊर्जा, हवा, पानी आदि लगातार उपलब्ध हैं और उनकी मात्रा मानव उपभोग से विशेष रूप से प्रभावित नहीं होती है। यद्यपि कई नवीकरणीय संसाधनों में इतनी तेजी से वृद्धि नहीं होती है, जिसके कारण इन संसाधनों के अत्यधिक उपयोग से इनमें कमीं होने की संभावना है। नवीकरणीय संसाधन अनवीकरणीय संसाधनों की तुलना में आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

अनवीकरणीय संसाधनः-जो संसाधन पर्यावरण में एक लंबी अवधि में बनते हैं और आसानी से नवीनीकृत नहीं किए जा सकते हैं उन्हें अनवीकरणीय संसाधन कहते हैं। खनिज पदार्थ इस श्रेणी में शामिल सबसे अच्छा उदाहरण है। इसका एक और अच्छा उदाहरण जीवाश्म ईंधन हैं क्योंकि उनके निर्माण की दर बहुत ही धीमी है। संभवतः इनके निर्माण में लाखों वर्षों का समय लग जाता है।

स्वामित्वः- स्वामित्व के आधार पर प्राकृतिक संसाधनों को निम्न प्रकार से वर्णित किया जा सकता हैः-

व्यक्तिगत संसाधन: वे संसाधन जिन परव्यक्ति विशेष के निजी स्वामित्व होते हैं वो व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं। व्यक्तिगत संसाधनों में भूखंड, घर इत्यादि शामिल हैं।

समुदायिक संसाधन: वे संसाधन जो एक समुदाय के सभी लोगों के लिए बनाया गया है या जो सर्वसुलभ हैं समुदायिक संसाधन कहलाते हैं। कब्रिस्तान इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण है।

राष्ट्रीय संसाधन: वैसे तो पृथ्वी पर उपलब्ध सभी संसाधन, चाहें वो व्यक्तिगत हो या सामुदायिक सभी संसाधन राष्ट्रीय संसाधन हैं तथा लोक कल्याण हेतु इन संसाधनों को अधिग्रहित करने के लिए राष्ट्र के पास वैधानिक शक्तियाँ भी मौजूद हैं। फिर भी इनमें राजनीतिक सीमाओं, आर्थिक क्षेत्रों के भीतर पाए जाने वाले सभी प्रकार के खनिज पदार्थों, वन्य जीवों आदि को राष्ट्रीय संसाधनों के रूप में उदाहरणार्थ देखा जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय संसाधन: जिन संसाधनों को अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा नियंत्रित किया जाता वे अंतर्राष्ट्रीय संसाधन की श्रेणी में आते हैं। अंतर्राष्ट्रीय जलक्षेत्र को उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के परिणामः- प्राकृतिक संसाधनों के हद से ज्यादा दुरुपयोग के परिणामस्वरूप पारिस्थितिक असंतुलन की स्थिति पैदा हो गई है। जैव विविधताओं की हानि भी तीव्र गति से हो रही है। पर्यावरण का दिन प्रतिदिन क्षरण होने लगा है। संसाधनों के अत्यधिक दोहन से संसाधन-संचालित संघर्ष जैसी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ भी पैदा हो गई हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन ने पारिस्थितिक तंत्र के संतुलन को बाधित कर दिया है, जिससे संभावित रूप से अप्रत्याशित नकारात्मक परिणाम उभर कर सामने आ रहे हैं। प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग के परिणाम निम्नलिखित हैः-

पर्यावरणः-प्राकृतिक संसाधनों के बिना सोचे-बिचारे किए जा रहे दुरुपयोग के परिणामस्वरूप वनस्पतियाँ पृथ्वी से समाप्त होती जा रही हैं तथा इन वनस्पतियों में अपना आवास बनाकर रहने वाले जीवों के लिए बहुत बड़ी परेशानी खड़ी हो गई है जिसने कारण बहुत सारे जीवों की प्रजातियाँ भई दिनों-दिन विलुप्त होती जा रही हैं।

आर्थिकः-प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से मिट्टी का क्षरण होना शुरू हो गया है। मिट्टी की उर्वरक शक्ति समाप्त होती जा रही है जिससे मिट्टी से उपजने वाली सभी वस्तुओं, फसलों आदि में वृद्धि कम हो गयी है। वस्तुओ एवं फसलों आदि में उपज कम होने के कारण इनकी कीमते भी बढ़ने लगी हैं जिसके कारण देश में एक प्रकार से आर्थिक संकट आने की संभावना भी बढ़ गई है।

स्वास्थ के लिएः-प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से हमारे स्वास्थ पर भी बहुत ही बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। पेड़-पौधों की अंधाधुन कटाई से वायुमंडल में कार्बनडाई-ऑक्साईड की मात्रा बढ़ने लगी है जिसके कारण हमारा वायुमंडल प्रदूषित होता जा रहा है और इस प्रदूषित वायुमंडल में सांस लेने के कारण हम आए दिन किसी ना किसी प्रकार की बिमारियों से ग्रषित होते रहते हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन रोकने संबंधी समाधानः-प्रकृति सिर्फ किसी एक की ही अमानत नहीं है बल्कि सबकी सामुहिक धरोहर है और इसका दोहन रोकना मानव के भविष्य के लिए अत्यंत ही आवश्यक है। मानव जाति और प्रकृति के बीच सामंजस्य की जो सीमा है, उसे पार करने से बचने में ही मनुष्य की भलाई है। सबसे पहले तो हमें अनुचित तरीके से संसाधनों का दोहन बंद करना होगा। जिस तरह हम प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहे हैं उसमें तत्काल बदलाव न किया तो उसका पर्यावरण पर व्यापक असर पड़ेगा। और जब पर्यावरण पर असर होगा तो उसका प्रभाव हमारे जीवन पर ना हो ऐसा कैसे हो सकता है। हर किसी को स्वस्थ, सुखी और सम्मान के साथ जीवन बिताने के लिए पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है लेकिन साथ ही हमें यह भी सुनिश्चित करने की जरुरत है कि संसाधनों का दोहन इतना भी अधिक न हो कि जलवायु और पर्यावरण के विघटन का कारण बन जाएं। दोहन रोकने के लिए जरूरी है कि प्राकृतिक पूंजी का जागरूकता के साथ संरक्षण किया जाए। मानव जीवन के विकास में उपयोग की जाने वाली

सभी वस्तुओं सामग्रियों, संसाधनों एवं उत्पादन प्रणालियों में अपशिष्ट की मात्रा को कम करना चाहिए। संसाधनों को टिकाउ तरीके से प्रतिबंधित करें एवं नवीकरणीय उर्जा के उत्पादन को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसी जीवनशैली को अपनाना चाहिए से जिससे पर्यावरण के दोहन की स्थिति ही न आए। प्रकृति और प्रकृत से प्राप्त संसाधनों का महत्व समझे तथा पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का सजगता से पालन करें।

निष्कर्षः- मानव जाति का अस्तित्व प्राकृतिक संसाधनों के बगैर संभव नहीं है। मनुष्य हर कदम पर प्रकृति द्वारा उपलब्ध कराए गए संसाधनों पर ही निर्भर है फिर भी वह अपने सुख-सुविधाओं में वृद्धि करने के चक्कर में प्राकृतिक संसाधनों का आँखे मूंद कर दोहन कर रहा है जिसका परिणाम भी भयानक रूप में उसके सामने आ रहा है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो एक दिन मनुष्य की ऐसी हो जाएगी कि वह प्राकृतिक संसाधनों के लिए तरस जाएगा और उसके सामने प्रकृति को बचाने का कोई भी विकल्प नहीं रह जाएगा। इसलिए यदि हम एक संतुलित एवं शांत जीवन चाहते हैं तथा हम चाहते हैं कि हमारी पीढ़ी ही नहीं अपितु हमारी आने वाली पीढ़ी को भी प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर सहयोग मिले तो उसके लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करने के बजाए उन्हें और अधिक बढ़ाने की ओर अग्रसर होना चाहिए। प्रकृति को सुरक्षित रखिए और खुद भी सुरक्षित रहिए।

*****

उच्च शिक्षा हेतु भारतीय छात्रों का पलायन

इम्तियाज अहमद,

कनिष्ठ अनुवादक

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के एक आंकड़े के अनुसार 2022 में 7,50,365 नए छात्रों ने उच्च अध्ययन के लिए विदेश की उड़ान भरी, आंकड़ा छह वर्षों में सबसे अधिक है। रिपोर्ट के अनुसार 2022 में कुल 13.2 लाख भारतीय छात्र विदेश में पढ़ाई कर रहे हैं। 2024 तक यह संख्या 18 लाख तक पहुँच जाने का अनुमान है। हर वर्ष भारत में 12 वीं के नतीजे आते ही प्रवेश पाने की होड़ लगती है। देश प्रतिष्ठित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने की चाहत रखने वाले कट ऑफ (अब सीयूईटी)) का इंतज़ार करते है। पश्चिमी देशों में पतझड़ की शुरूआत के साथ एक और होड़ देखने को मिलती है वह है देश के बाहर जाकर पढ़ने वाले युवाओं की।

परदेश में पढ़ाई का चलन हमारे यहाँ कोई नया नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में यह चलन तेजी के साथ बढ़ा है, आंकड़े तो यही कहते है। यह हमारे लिए चिंता का विषय है। बदलते पाठ्यक्रम, घटती दूरियां, वैश्विक संबंध, अवसर एवं अनुसंधान के नए मौकों के अलावा एक प्रमुख कारण हमारी शिक्षा व्यवस्था भी है। विदेश जाने वाले अधिकांश छात्रों का इस मुद्दे पर एक सा जवाब होता है देश में विकल्पों की कमी। क्या वाकई देश में विकल्पों की कमी है या वर्तमान युवा पीढ़ि की आकांक्षा को पूरा करने में भारतीय शिक्षा प्रणाली की नाकामी । इस सवाल के कई उत्तर हो सकते है, पहला - भारत के प्रतिष्ठित कॉलेजों और संस्थानों में सीटों का टोटा है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में अभी भी सर्जिकल स्ट्राइक होना बाकी है। विश्व के टॉप 100 शैक्षणिक संस्थानों में देश के संस्थानों के नाम उँगलियों पर गिने जा सकते हैं तो दूसरी तरफ अवसरों का नया संसार। विश्व स्तरीय फैकल्टी, आधुनिक सुविधाओं से लैस परिसर, शोध के अवसर, दूसरी संस्कृति के साथ मेलजोल, बड़ा वैश्विक नेटवर्क और वैश्विक प्रोफेशनल टैग के साथ शानदार रोजगार का अवसर जो परदेश में मिलता है युवा पीढ़ी को आकर्षित कर पलायन के लिए मजबूर करता है।

प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा

भारतीय शिक्षा प्रणाली और देश के टॉप विश्वविद्यालयों में छात्रों को दाखिला देने का तरीका बहुत प्रतिस्पर्धी है। वैश्विक परिवेश और भारतीय परिवेश में एक बड़ा अंतर है। आज दुनिया भर के विश्वविद्यालयों में प्रतिस्पर्धा और टेस्ट आधारित परिणाम के वैकल्पिक साधनों पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है। वहीं भारत में टेस्ट के रास्ते मेरिट की तलश को बढ़ावा दिया जा रहा है।

सीयूईटी का आगमन

पलायन को बढ़ावा देने में साझा विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (सीयूईटी) को भी अहम् कारक माना जा रहा है। इरादा तो वरदान साबित करने का था। लेकिन अब कक्षा 12 के अंकों से तय नहीं होगा कि किस कॉलेज में दाख़िला मिलेगा। सीयूईटी ने कट-ऑफ प्रणाली का पटाक्षेप कर दिया है। देश में करीब 14 लाख छात्र स्कूलों से पास होकर निकलते हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालयों में महज 2,00,000 सीटें हैं। आईआईटी में 17 हजार और आईआईएम में 2400 सीटें है। साफ है कड़ी प्रतिस्पर्धा से कई छात्र दिलचस्पी गंवा रहे हैं उन्हें लगता है आईआईटी, आईआईएम और देश के टॉप

कॉलेजों में एडमिशन की दौड़ में शामिल होने की जगह टॉप की 100 फॉरेन यूनिवर्सिटी से डिग्री लेना ज्यादा फायदेमंद है।

विकल्प का अभाव

आज के युवा प्रयोगवादी हैं और उच्च शिक्षा में अलग सेटअप को तलाशते हैं. बदलते परिवेश के अनुरूप ऑफ बीट कोर्स करना चाहता है। अधिकांश छात्रों को यहां की तमाम यूनिवर्सिटी में उपलब्ध पाठ्यक्रम निरर्थक लगते हैं। वहीं विदेशी शिक्षातंत्र उन्हें खुद को अभिव्यक्त करने, समीक्षा और आलोचना करने की आजादी देते हैं। छात्र विदेशों में ऐसे कोर्स, विषय और विशेषज्ञता के विकल्प चुन रहे हैं जो उद्योगों के अनुरूप हो और बदलती तकनीकी के लिहाज से अपडेटेड भी हो। युवाओं का रुझान खाद्य सुरक्षा, डिजिटल टेक्नोलॉजी, जलवायु परिवर्तन, हरित ऊर्जा, डेटा साइंस, एनालिटिक्स, फिन-टेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग में ज्यादा है। एटमॉस्फेरिक साइंस जैसे नए विषय पढ़ने वालों की संख्या भी बढ़ी है। तमाम कोशिशों के बावजूद हमारी शिक्षा प्रणाली वह सब नहीं दे पाती जो इन विश्वविद्यालयों में मिलता है।

ऑफ बीट कोर्स की चाहत

शिक्षा के क्षेत्र में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश और देश में विदेशी शिक्षण संस्थानों के लिए द्वार खोलने की घोषणा ने जितना आकर्षण पैदा नहीं किया जितना विदेशों में पढ़ने वाले छात्रों को बिना गारंटी मिलने वाला ऋण, जो छात्रों के लिए बेहद सुलभ हो गया है और हालिया वर्षों में ऋण प्रक्रिया भी आसान हुई है, ने परदेश जाने वालों को आकर्षित किया है।

विदेशी विश्वविद्यालयों में जाने का एक और आकर्षण है छात्रवृति सुविधा। माता पिता के लिए बच्चों कि शिक्षा खर्च एक निवेश की तरह है खासकर जब मामला विदेश जाकर पढ़ाई करने का हो।

बदलाव से परहेज

एक तरफ बहुसांस्कृतिक विश्वविद्यालय का अनुभव, रुचि और रुझान के दूसरे विषयों को सीखने -समझने का अवसर, वैश्विक अनुभव और सांस्कृतिक विविधता के साथ वैश्विक स्वीकार्यता और प्रोफेशनल टैग है, वहीं हम आज भी पढ़ाई के घिसे-पिटे और रटते-पीटते तरीकों से बाहर नहीं आना चाहते। तमाम उपायों के बाद भी अभी तक हम वह दे पाने में नाकाम रहे है जो छात्रों को चाहिए।

गज़ब का विरोधाभास है, एक ओर भारत का लक्ष्य वर्ष 2027-28 तक 5 ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था बनने का है तो वहीं सवाल यह है कि फिर युवा, यहां तक अति-अमीर भी, बड़ी संख्या में देश से पलायन करने की कोशिश में क्यों लगे हैं? इससे ज्यादा अहम यह कि क्या वे इस संभावना को लेकर उत्साहित नहीं हैं कि जब कहा जा रहा है कि भारत की आर्थिक वृद्धि दर विश्व की मुख्य अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक रहेगी और जल्द ही जापान और जर्मनी को पछाड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी बन जाएगी। वह भी 2030 से पहले, जैसा कि वैश्विक बैंकिंग मूल्यांकन एजेंसी मॉर्गन स्टेन्ली द्वारा प्रस्तुत भविष्यवाणी दर्शा रही है। पिछले अनेक सालों से नीति-नियंताओं ने ऐसी नीतियां चलाईं जिससे गांवों से शहरों की ओर पलायन को बढ़ावा मिलता गया लेकिन इस पुरानी लीक की बजाय अब युवाओं ने प्रवास की नई राह पकड़ ली,

गांव से सीधा विदेशी मुल्क। भारत से न केवल युवा बल्कि अति-धनाढ्य भी बड़ी संख्या में भारतीय नागरिकता त्यागकर विदेशों में बसने के मौके तलाश रहे हैं। यह अति-धनी वह हैं, जिनके पास निवेश के लिए 10 लाख डॉलर से ज्यादा की तो केवल नगदी ही है। संसद को बताया गया है कि 2011 के बाद से 16 लाख से ज्यादा अमीरों ने भारतीय नागरिकता छोड़ी है, इनमें पिछले साल की 1,83,741 की संख्या शामिल है।

विदेश जाने के क्रेज को रोकने की जरूरत

चूंकि व्यक्तिगत तौर पर विदेशों में जाने वाले युवा विद्यार्थी पूर्व में विदेशों में जाने वाले भारतीयों की सफलता की गाथाओं से प्रभावित होकर विदेशों की ओर रुख कर रहे हैं। लेकिन वे यह समझ नहीं पा रहे कि आज कनाडा, आस्ट्रेलिया और यूरोपीय देशों में, जहां वे शिक्षा संस्थानों में प्रवेश ले रहे हैं, वे शिक्षा संस्थान स्वयं के अस्तित्व को बचाने हेतु भारतीय विद्यार्थियों को आसानी से अपने शिक्षण संस्थानों में प्रवेश दे रहे हैं। यही नहीं, भारतीय और अन्य देशों के अति इच्छुक विद्यार्थियों से भारी फीस ऐंठने हेतु शिक्षा की कई दुकानें भी खुल रही हैं, जिनका वास्तविक शिक्षा से कोई सरोकार नहीं है।

ऐसे में केन्द्र और राज्य सरकारों को विदेशों में शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक युवाओं को इस हेतु वास्तविकता से अवगत कराने के लिए विशेष प्रयास करने की जरूरत है, ताकि वे विदेशों में जाकर अपने माता-पिता की गाढ़ी कमाई को यूं ही न गंवा दें। गौरतलब है कि पिछले लगभग दो दशकों से भारत के कई नागरिक एजेंटों के माध्यम से विदेशों में, खास तौर पर खाड़ी के देशों में रोजगार की तलाश में गए और वहां उन्हें कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ा। इन युवाओं के पासपोर्ट तक एजेंटों के द्वारा कब्जा लिए जाते थे और उनका तरह-तरह से शोषण भी किया जाता था। उन्हें अत्यंत अमानवीय परिस्थितियों में रहना पड़ता था, ऐसे में भारत सरकार द्वारा विविध प्रकार के प्रयासों से समझाने की कोशिश की गई और सरकार ने एजेंटों के पंजीकरण को अनिवार्य किया और विदेशों में जाने वाले भारतीयों के हित संरक्षण के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास भी किए। इसी तर्ज पर देश के अनभिज्ञ युवा जो विदेशों में शिक्षा के नाम पर ठगे जा रहे हैं, उन्हें इस समस्या से बचाने के लिए सरकार को प्रयास करने होंगे। समाज के प्रबुद्ध वर्ग को भी आगे आना होगा।

*****

संयुक्त परिवार का स्वरूप एवं परिवर्तन की प्रवृति

अनुश्री विश्वकर्मा,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सारांशः- परिवार की संयुक्तता अर्थात् सह-निवासी व सह-भोजी नातेदारी समूह अदृश्य नहीं हो रही है और स्थिति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है जब कि भारत के लोगों के मस्तिष्क में संयुक्त परिवार की धारणा पूर्णतः विलुप्त हो जाएगी। केवल संयुक्तता के संबंध विच्छेदन प्रवृति में बदलाव आ रहा है। विस्तृत संयुक्त परिवार की अपेक्षा अब छोटे क्षेत्र में काम करने वाले दो-तीन पीढ़ीयों तक ही परिवार होगा। साथ ही अधिकांश ऐसे एकाकी परिवार जिनमें एक व्यक्ति, उसकी पत्नी और अविवाहित बच्चे अलग रहते हैं, प्रकार्य की दृष्टि से अपने प्राथमिक नातेदारों के साथ (जैसे भाई, पिता आदि) संयुक्त बने रहेंगे।

संयुक्त परिवार की विशेषताएः-संयुक्त परिवार के कुछ प्रमुख लक्षण निम्न प्रकार हैः-

(1) सत्तात्मक संरचनाः-सत्तात्मक का अर्थ है कि निर्णय तथा निश्चय करने की शक्ति एक व्यक्ति में होती है जिसकी आज्ञा का पालन बिना चुनौती के होना चाहिए। प्रजातंत्रीय परिवार में सत्ता एक या एक से अधिक लोगों में निहित होती है जिसका आधार दक्षता और योग्यता होता है। सत्तात्मक परिवार में परम्परा से सत्ता आयु एवं वरिष्ठता के आधार पर सबसे बड़े पुरुष के पास ही होती है। परिवार का मुखिया अन्य सदस्यों को थोड़ी ही स्वतंत्रता प्रदान करता है और निर्णय करने में वह अन्य सदस्यों की राए जाने या न जाने, उसका निर्णय अंतिम रूप मे मान्य होता है। लेकिन जनतंत्रीय परिवार में मुखिया का कर्तव्य होता है कि वह अन्य सदस्यों की सलाह ले और कोई भी निरणय करने से पूर्व उनकी राय को पूर्ण महत्व प्रदान करें।

(2) पारिवारिक संगठनः- इसका अर्थ है कि व्यक्ति के हितों का पूरे परिवार के हितों के कम महत्व होता है, अर्थात परिवार का लक्ष्य ही व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। जैसे यदि बच्चा स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत उच्च शिक्षा जारी करना चाहता है परंतु उसे परिवार के व्यापार को देखने के लिए दुकान पर बैठने को कहा जाए तो उसे परिवार के हितों के आगे अपने हितों की अनदेखी करनी होगी।

(3) आयु और संबंधों के आधार पर सदस्यों की प्रस्थिति का निर्धारणः- परिवार के सदस्यों की प्रस्थिति का निर्धारण उनकी आयु एवं संबंधों द्वारा निश्चित होता है। पति का पद पत्नी से ऊँचा होता है। दो पीढ़ियों में ऊँची पीढ़ी वाले प्रस्थिति अधिक ऊँची होती है। लेकिन उसी

पीढ़ी में बड़ी आयु वाले व्यक्ति की प्रस्थिति कम आयु वाले व्यक्ति की प्रस्थिति से ऊँची होती है।

(4) संतान तथा भ्रातृक संबंधों की दाम्पत्य संबंधों पर वरीयताः- रक्त संबंधो को वैवाहिक संबंधों की अपेक्षा अधिक वरीयता दी जाती है। दूसरे शब्दों में पती-पत्नी के संबंध, पिता-पुत्र या भाई-भाई के संबंधों की अपेक्षा निम्न माने जाते हैं।

(5) संयुक्त दायित्वों के आदर्श पर परिवार का कार्य संचालनः- परिवार संयुक्त परिवार के उत्तरदायित्वों के आदर्शों के आधार पर कार्य करता है। यदि पिता अपनी पुत्री के विवाह के लिए ऋण लेता है तो उसके पुत्रों का भी यह दायित्व हो जाता है कि वह उसकी वापसी का प्रयत्न करें।

(6) सभी सदस्यों के प्रति समान बर्तावः-परिवार के सभी सदस्यों पर समान ध्यान दिया जाता है। यदि एक भाई के पुत्र को 4000 रुपये मासिक आय के साथ खर्चीला कन्वेट स्कूल में प्रवेश दिलाया जाता है तो दूसरे भाईयों जिसकी मासिक आय कम है के पुत्रों को इन्हीं सुविधाओं के साथ अच्छे स्कूल में पढ़ाया जाएगा।

(7) वरिष्ठता के सिद्धांत के आधार पर सत्ता का निर्धारणः- परिवार में स्त्री-पूरुषों, पुरुषों-पुरुषों, स्त्रियों-स्त्रियों के बीच के संबंधों का निर्धारण वरीयता क्रम के अनुसार निर्धारित होता है। यद्यपि सबसे बड़ी आयु का पुरुष या स्त्री किसी दूसरे को सत्ता सौंप सकते हैं लेकिन यह वरीयता के सिद्धांत पर ही होगा जिससे व्यक्तित्वाद की भावना विकसित न हो सके।

परिवर्तन संबंधी आनुभविक अध्ययन

इस संबंध में विभिन्न आनुभविक अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि पुरातन शैली के परिवारों की संख्या सामान्य अनुपात से कहीं कम है। जनगणना के आधार पर पाया गया कि छोटे घरों का एक बड़ा अनुपात मूल रूप से देश की परम्पराओं के अनुसार अब परिवार संयुक्त नहीं है औऱ संयुक्त परिवार से टूटने और अलग घर स्थापित करने की प्रवृत्ति दिनो-दिन बढ़ती जा रही है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों के आधार पर ज्ञात होता है कि पुरातन शैली का संयुक्त परिवार अब शायद ही कहीं औऱ कभी ही मिले तथा संयुक्तता की प्रकृति अब सह निवास से मात्र दायित्व निभाने में परिवर्तित हो रही है।

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन के कारक

परिवार की संरचना में परिवर्तन किसी प्रभावों के एक समुच्चय से नहीं आया है, औऱ न यह संभव है कि इन कारकों में से किसी एक को प्राथमिकता दी जा सके। इस परिवर्तित होते हुए परिवार के लिए कई कारक उत्तरदायी हैं। औद्योगिकरण और उसके सार्वभौमिक मापदंड जो निरंतर

विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं, व्यक्तिवाद के आदर्श, समानता और आजादी तथा वैकल्पिक जीवन पद्धति की संभावना जैसे कारणों के सम्मिलन से ही संक्रमणकालीन परिवार उदय हुआ है। मिल्टर सिंगर ने परिवार में परिवर्तन के चार कारकों को उत्तरदायी माना हैः- आवासीय गतिशीलता व्यावसायिक गतिशीलता, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा और द्रव्यीकरण।

समाज के विभिन्न समाजों की संरचना का विश्लेषण यह बताता है कि सामाजिक संरचना का निर्माण आधारित कारकों पर निर्मित होती है। इनमें से अधिक महत्वपूर्ण कारक - आयु, यौन, भेद, संबंद्ध, स्थान तथा अन्य समितियाँ है। समाज की जड़े अतीत में होती हैं। वह वर्तमान में जीता है और भविष्य उसके लिए चिंता और प्रावधान का विषय होता है। दुनिया में शायद ही ऐसा समाज हो जो पूरी तरह से अपनी परंपराओं से कटा हो। परंपराएं तब तेजी से विघटित होती हैं जब समाज की जातीय अस्मिता का क्षय होने लगता है और धीरे-धीरे इतनी बिगड़ती है कि समाज अपने अस्तित्व की आहट सुनने में असमर्थ हो जाता है, लेकिन इतना तो तय है कि समाज जड़ नहीं होता है। गत्यात्मक संस्कृति की प्रकृति में अंतर्निहित होती है। परिवर्तन की चुनौतियों से साक्षात्कार कर सकने में असहज सामाजिक व्याधि बन जाती है। अनुकूलन व नवाचार की क्षमता के अभाव में संस्कृतियाँ क्षिण हो जाती हैं। उसके अस्तित्व और अस्मिता दोनों पर ग्रहण लग जाता है। इस तरह परिवर्तन की बात मंदगति या उसका अभाव अनेक समस्याओं को जन्म देता है जिसका प्रभाव सामाजिक संरचना पर भी परिलक्षित होता है।

निष्कर्षः- संरचनावादी परिप्रेक्ष्य में परिवार को एक विशेष समय पर अतः संबंधित परिस्थितियों तथा भूमिकाओं की संरचना के संबंध में तथा इसका अपने सदस्यों के प्रति सुगठित अधिकारों व दायित्वों के अंतः संबंधों की संरचना के रूप मे देखा जाता है। परिवार में व्यक्तिगत तथा वैवाहिक सामन्जस्य की प्रक्रिया की भी व्याख्या करते हैं, अर्थात परिवार में उत्पन्न तनाव की स्थितियों से मुक्त होने के तरीकों पर भी विचार करते हैं। प्रकार्यवादी उपागम परिवार के कार्यों की सार्वभौमिकता की कल्पना करता है तथा कुछ विशिष्ट कार्यों से घिरी भूमिकाओं पर भी विचार करता है। यह उपागम परिवार की विभिन्न भूमिकाओं के मध्य संबंध भी समझाता है और परिवार के कार्यों के भूमिकाओं के परिवर्तन मुख्यतः समाज में सामाजिक मानदडों व मूल्यों के परिवर्तन के कारण मानता है।

*****

जय श्री सरस्वती माँ

मीना रानी गोंड,
लेखापरीक्षक

मैं, मीना अक्सर किसी के घर जाते देखती हूँ कि छोटे-बड़े बच्चे जाते ही पैर छूते हैं और नमस्ते बोलते हैं लेकिन हम जैसे सभी लोग जो कि अन्य प्रांतों में रहते हैं वहाँ कहीं पर पैर छूने का रिवाज़ है तो कहीं सिर्फ नमस्ते, कोई हाय-हल्लो ही बोलकर निकल लेते हैं। हम सभी क्यों न किसी भी प्रांत के हों अपने बच्चों को सही संस्कार सिखाएं। जैसे कोई हमारे यहाँ आएं तो उनके पैर छूना। जब वो जाएं तो भी पैर छूकर विदा करना। अपनी बेटियों व बेटों को आपस में तमीज़ से रहना व बोलना सिखाएँ।

बिस्तर से उठते ही अपना बिस्तर खुद ही व्यवस्थित करना सिखाएं। सभी बड़ों को आप व छोटों को तुम से संबोधित करना सिखाए। बच्चों को समझाएं कि अतिथि देव के समान होते हैं। कोई घर आए तो पानी अवश्य पिलाएं। ये सब संस्कार हमारे अपने परिवार के होने चाहिए। अगर हम किसी भी गलती पर बेटी को डांट रहे हैं तो बेटों को भी डांटने और समझाने में संकोच नहीं करना चाहिए। बच्चों को सामाजिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। आजकल देखा जाता है कि बच्चे मोबाईल के आदि होते जा रहे हैं। मां-बाप बच्चों को व्यस्त रखने के लिए परेशान न कर पाने के डर से मोबाईल दे देते हैं जो कि उन बच्चों के बड़े होते-होते वे इन सब के आदि हो जाते हैं और मोबाईल ना देने पर चिड़चिड़े व अभद्र भाषा का प्रयोगकरने लग जाते हैं। जिससे मां-बाप से हर काम के बदले मोबाईल ही मांगते हैं और मोबाईल ना देने पर धमकी देते हैं कि मैं ये काम नहीं करूंगा या वो काम नहीं करूंगा।

इन सबसे तात्पर्य यह है कि बच्चों को घरेलू काम जैसे अपना बिस्तर ठीक करना, चप्पलें सही स्थान पर रखना, पौधों को पानी देना, घर में पड़ा इधर-उधर सामान सहेजना आदि सिखाएं। इसके अलावा थोड़ी पेंटिग, थोड़ी ड्रॉईंग, क्रॉफ्टिंग, वेस्ट मटेरियल के सजावती सामान बनाना सिखाएं। बच्चे चाहे छोटे हों या बड़े उनकी योग्यता अनुसार उन्हें काम देकर व्यस्त रखा जा सकता है ना कि मोबाईल देकर। इससे बच्चों को प्रोत्साहन भी मिलेगा और घर के सभी जरूरी काम भी हो जाएंगे। जिसके परिणाम स्वरूप माता-पिता अपने बच्चों के साथ अधिक से अधिक समय साथ बिताएंगे और एक समृद्ध संस्कारी परिवार का भी निर्माण हो जाएगा।

*****

ग्लोबल वार्मिंग

एम. रहमान खान,
डाटा एंट्री ऑपरेटर

भूमंडलीय तापक्रम में वृद्धि क्या है?

ग्लोबल वार्मिंग पृथ्वी की सतह के पास तापमान में क्रमिक वृद्धि की घटना है। यह घटना पिछले एक या दो शताब्दियों में देखी गई है। इस परिवर्तन ने पृथ्वी के जलवायु पैटर्न को बिगाड़ दिया है। हालाँकि, ग्लोबल वार्मिंग की अवधारणा काफी विवादास्पद है लेकिन वैज्ञानिकों ने इस तथ्य के समर्थन में प्रासंगिक डेटा प्रदान किया है कि पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है।ग्लोबल वार्मिंग के कई कारण हैं, जिनका मनुष्यों, पौधों और जानवरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ये कारण प्राकृतिक हो सकते हैं या मानवीय गतिविधियों का परिणाम हो सकते हैं। समस्याओं पर अंकुश लगाने के लिए, ग्लोबल वार्मिंग के नकारात्मक प्रभावों को समझना बहुत महत्वपूर्ण है।

ग्लोबल वार्मिंग के मानव निर्मित कारणः-

वनों की कटाई- पौधे ऑक्सीजन का मुख्य स्रोत हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड लेते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहता है। कई घरेलू और व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए वनों को खत्म किया जा रहा है। इससे पर्यावरण असंतुलन पैदा हुआ है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ रही है।

वाहनों का उपयोग- वाहनों का उपयोग, चाहे बहुत कम दूरी के लिए ही क्यों न हो, विभिन्न गैसीय उत्सर्जनों का कारण बनता है। वाहन जीवाश्म ईंधन जलाते हैं जो वातावरण में बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य विषाक्त पदार्थों का उत्सर्जन करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप तापमान में वृद्धि होती है।

क्लोरोफ्लोरोकार्बन- एयर कंडीशनर और रेफ्रिजरेटर के अत्यधिक उपयोग से मनुष्य पर्यावरण में सी.एफ.सी. जोड़ रहा है जो वायुमंडलीय ओजोन परत को प्रभावित करता है। ओजोन परत पृथ्वी की सतह को सूर्य द्वारा उत्सर्जित हानिकारक पराबैंगनी किरणों से बचाती है। सी.एफ.सी. के कारण ओजोन परत का क्षरण हुआ है और पराबैंगनी किरणों के लिए रास्ता बना है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है

औद्योगिकविकास- औद्योगीकरण के आगमन के साथ ही पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। कारखानों से निकलने वाले हानिकारक उत्सर्जन से पृथ्वी का तापमान और बढ़ रहा है।2013 में जलवायु परिवर्तन के लिए अंतर-सरकारी पैनल ने रिपोर्ट दी थी कि 1880 से 2012 के बीच वैश्विक तापमान में 0.9 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है। औद्योगिकीकरण से पहले के औसत तापमान की तुलना में यह वृद्धि 1.1 डिग्री सेल्सियस है।

कृषिः-विभिन्न कृषि गतिविधियों से कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन गैस उत्पन्न होती है। ये वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों को बढ़ाती हैं और पृथ्वी के तापमान को बढ़ाती हैं।

जनसंख्याः- जनसंख्या में वृद्धि का मतलब है कि ज़्यादा लोग सांस ले रहे हैं। इससे वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है, जो ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्राकृतिक कारण

ज्वालामुखीः- ज्वालामुखी ग्लोबल वार्मिंग के सबसे बड़े प्राकृतिक कारणों में से एक हैं। ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान निकलने वाली राख और धुआं वायुमंडल में जाकर जलवायु को प्रभावित करता है।

जल वाष्पः-जल वाष्प एक प्रकार की ग्रीनहाउस गैस है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि के कारण, जल निकायों से अधिक पानी वाष्पित हो जाता है और वायुमंडल में रहता है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढ़ती है।

पिघलता हुआ पर्माफ्रॉस्टः- पर्माफ्रॉस्ट जमी हुई मिट्टी है जिसमें कई सालों तक पर्यावरणीय गैसें फंसी रहती हैं और यह पृथ्वी की सतह के नीचे मौजूद होती है। यह ग्लेशियरों में मौजूद होती है। जैसे-जैसे पर्माफ्रॉस्ट पिघलता है, यह गैसों को वापस वायुमंडल में छोड़ता है, जिससे पृथ्वी का तापमान बढ़ता है।

जंगल की लपटेः- जंगल में आग लगने से भारी मात्रा में कार्बन युक्त धुआँ निकलता है। ये गैसें वायुमंडल में फैल जाती हैं और पृथ्वी का तापमान बढ़ा देती हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग होती है।

ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावः- ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख प्रभाव निम्नलिखित हैं:

तापमान में वृद्धिः- ग्लोबल वार्मिंग के कारण पृथ्वी के तापमान में अविश्वसनीय वृद्धि हुई है। 1880 से अब तक पृथ्वी का तापमान ~1 डिग्री बढ़ गया है। इसके परिणामस्वरूप ग्लेशियरों के पिघलने में वृद्धि हुई है, जिससे समुद्र का स्तर बढ़ गया है। इसका तटीय क्षेत्रों पर विनाशकारी प्रभाव हो सकता है।

पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरेः- ग्लोबल वार्मिंग ने प्रवाल भित्तियों को प्रभावित किया है जिससे पौधों और जानवरों के जीवन को नुकसान हो सकता है। वैश्विक तापमान में वृद्धि ने प्रवाल भित्तियों की नाजुकता को और भी बदतर बना दिया है।

जलवायु परिवर्तनः- ग्लोबल वार्मिंग के कारण जलवायु परिवर्तन हो रहा है। कहीं सूखा पड़ रहा है तो कहीं बाढ़ आ रही है। यह जलवायु असंतुलन ग्लोबल वार्मिंग का ही नतीजा है।

रोगों का प्रसारः- ग्लोबल वार्मिंग के कारण गर्मी और नमी के पैटर्न में बदलाव आ रहा है। इससे मच्छरों की आवाजाही बढ़ रही है जो बीमारियाँ फैलाते हैं।

उच्च मृत्यु दरः- बाढ़, सुनामी और अन्य प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि के कारण, औसत मृत्यु दर आमतौर पर बढ़ जाती है। साथ ही, ऐसी घटनाएँ बीमारियों के फैलने का कारण भी बन सकती हैं जो मानव जीवन को बाधित कर सकती हैं।

प्राकृतिक आवास की हानिः- जलवायु में वैश्विक बदलाव के कारण कई पौधों और जानवरों के आवास नष्ट हो जाते हैं। इस स्थिति में, जानवरों को अपने प्राकृतिक आवास से पलायन करना पड़ता है और उनमें से कई विलुप्त भी हो जाते हैं। यह जैव विविधता पर ग्लोबल वार्मिंग का एक और बड़ा प्रभाव है ।

ग्लोबल वार्मिंग समाधानः-जैसा कि पहले कहा गया है, यह चुनौतीपूर्ण हो सकता है लेकिन यह पूरी तरह से असंभव नहीं है। जब संयुक्त प्रयास किए जाते हैं तो ग्लोबल वार्मिंग को रोका जा सकता है। इसके लिए, व्यक्तियों और सरकारों, दोनों को इसे प्राप्त करने की दिशा में कदम उठाने होंगे। हमें ग्रीनहाउस गैस की कमी से शुरू करना चाहिए। इसके अलावा, उन्हें गैसोलीन की खपत पर नजर रखने की जरूरत है। एक हाइब्रिड कार पर स्विच करें और कार्बन डाइऑक्साइड की रिहाई को कम करें। इसके अलावा, नागरिक सार्वजनिक परिवहन या कारपूल को एक साथ चुन सकते हैं। इसके बाद, रीसाइक्लिंग को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

ग्रीनहाउस प्रभाव क्या है? उदाहरण के लिए, जब आप खरीदारी करने जाते हैं, तो अपने कपड़े की थैली ले जाएं। एक और कदम जो आप उठा सकते हैं वह है बिजली के उपयोग को सीमित करना जो कार्बन डाइऑक्साइड की रिहाई को रोक देगा। सरकार के हिस्से पर, उन्हें औद्योगिक कचरे को नियंत्रित करना चाहिए और उन्हें हवा में हानिकारक गैसों को बाहर निकालने से रोकना चाहिए। वनों की कटाई को तुरंत रोका जाना चाहिए और पेड़ों के रोपण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

संक्षेप में, हम सभी को इस तथ्य का एहसास होना चाहिए कि हमारी पृथ्वी ठीक नहीं है। इसका इलाज करने की जरूरत है और हम इसे ठीक करने में मदद कर सकते हैं। वर्तमान पीढ़ी को भविष्य की पीढ़ियों की पीड़ा को रोकने के लिए ग्लोबल वार्मिंग को रोकने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए। इसलिए, हर छोटा कदम, कोई फर्क नहीं पड़ता कि कैसे छोटा वजन बहुत वहन करता है और ग्लोबल वार्मिंग को रोकने में काफी महत्वपूर्ण है।

*****

आदरणीय दीदी एवं जीजाजी को विवाह की पचासवीं वर्षगांठ की

बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं

संध्या सिंघल,
पत्नी श्री समीर कुमार सिंघल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ऋद्धि-सिद्धि संग हे गणपति महाराज आपका अभिनंदन,
संपन्न करें यह महापर्व, है सादर शत-शत वंदन।

दीदी संग जीजाजी के फेरों का शुभ दिन आया,
हम स्वर्ण जयंती मना रहे, उल्लास हृदय में छाया।

नभ के दीप, सीप के मोती, हीरक हार नहीं मेरे,
श्रद्धा सुमन प्रेम से प्रियवर, हम सब तुम पर वारे।

प्रिय जीजाजी चिंरजीवी हो, दीदी नव नित श्रृंगार करे,
माथे की बिदिया सजी रहे, हाथों में मेहंदी रची रहे।

उल्लास रहे, मृदुहास रहे, जन्मों-जन्मों तक साथ रहे,
वैभव से परिपूर्ण सदा, सुखमय घर परिवार रहे।

गुरुजन, परिजन, स्वजन सभी का सादर स्नेहाशीष,
इस शुभ तिथि की हीरक जयंती आवे हे जगदीश।

*****

कविता

मो.वसीम खान,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

यह शहर है छाया का,

मानव का तो नाम नहीं।

अस्थि पंजर और नरमुंडो का,

फैला हुआ है साम्राज्य यहीं।

टूट रही हैं चूड़ियाँ,

उजड़ रही आवाजें,

सम्प्रदाय की अग्नि में,

जल रहा है सारा देश।

मानवता का नाम नहीं,

रह गए हैं दानव शेष।

हर तरफ छाया हुआ है,

लालिमा लिए हुए अंधकार यहाँ,

रक्त अग्नि और धुआँ,

यही कुछ बचा है यहाँ।

यह शहर है छाया का,

मानव का तो नाम नहीं।

मानव ने मानव का संहार किया,

पशुओं से भी बुरा व्यवहार किया।

आधुनिक आदम युग है यह,

भाई ने भाई पर वार किया।

यह शहर है छाया का,

मानव का तो नाम नहीं,

अस्थि पंजर और नरमुंडो का,

फैला हुआ है साम्राज्य यहीं।

अभिमान

माना कि तू जवान है,

और खूबसूरत भी है,

जिसका तुझे इतना अभिमान है।

तू क्या भूला हुआ है, न रहेगी जवानी

और न बचेगी खूबसूरती तेरी।

फिर भी तूझे अपने पर अभिमान है।

एक दिन आएगा बीमार बुढ़ापा,

रह जाएगा धरा अभिमान।

क्या किसी भी वीर की,

ताकत और जवानी हमेशा रहीं।

क्या तू भूल गया है,

सिकंदर, नैपोलियन, हिटलर और गाँधी,

इन वीरों की भी यही बनी समाधी।

जिस माटी से है बना,

इसी में तू होगा फना।

वाह रे मनुष्य फिर भी,

तुझे इतना अभिमान है।

*****

कार्यालय में आयोजित योग दिवस

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक

महाप्रबंधक कार्यालय, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर